यह हठ जोगिन अपनी साधना में ख़री

हमारें समाज की कहावतें भी कसौटी पर उतरी ख़री

नव्वें दिन हुऐ कोरोना को आये

नव्वें दिन हुऐ आपको घर से बाहर आये

नव्वें दिन हमनें यों ही व्यर्थ न गवायें

लिखीं हैं नव्वें कहानियॅा गप्पें कहावतों पर आधारित

लेखक ः

शिवराज गोयल

देर से ही सही

छोरो सुधर गयो।

एक पारिवारिक एकांकी:

जब भी आवाज लगाई

लड़का एक नहीं सुनें

पोप म्यूज़िक व थिरकने में मस्त

घर में कलह तो यही है

रोज़ किट किट

मुझसे बर्दाश्त होती नहीं

श्रीमती जी को मेरी आवाज़ बुरी लगे

उत्तर तो धरा धराया-

ठहरो! बच्चे का टिफिन बना रही हूँ।

चलो जाने दो

लड़का बिना पूछे घर से गया।

तीन घंटे बाद आया।

मुझें मेरा जन्म सिद्ध अधिकार याद आया-

पूछा- कहां गया था

जबाब आया-

श्री श्री रविशंकर जी के

art of living class में

और कहाँ !

पूछा - क्या सीखा

जबाब था-याद नहीं रहा ।

अगला सवाल- तो यह टिफिन विफिन

का नाटक क्यों

लड़का बैठा था तन के खड़ा हो गया

बोला- नाटक

चलो नाटक सही

पर जो आज खेला

कभी नहीं खेला।

उसने बताया-

हम 30 ऐक्टर थे 30 टिफिन।

सब के सामने एक खाली प्लेट

उस में अपने घर से लाया खाना धरो

और प्लेट हाथ में उठा रखो़

भजन चलने लगा- मुकुंद माधव जै घन श्याम

प्लेटों ka क्रम चला़

अपने हाथ की प्लेट बायें वाले को दो़

और दायें वाले से लो।

भजन चलता रहा़

प्लेटें घुमती रही ।

न मेरी प्लेट मुझें दिखी

न मैं होश में था़

भजन में मस्त था।

भजन रूका़

जो प्लेट हाथ में आई़

सो ही अपनी समझ कर

प्रेम से खाई।

पिता जी के आँसू बह रहे थे़

बोले- अब फिर कब जायेगा।

०००००

बादशाह अकबर और बीरबल की नोंक झोंक तो सदा सुहागन की तरह फलती फूलती चहकती रही।

पर एक दिन अकबर को सपना आया कि वह मर गया। उसने दरबार में सपनें का जिक्र किया तो लोग लगे रोने धोने़ औरतों ने भी स्यापा लेकर छाती पीटने लगी।

बीरबल भी सिर मुंडा कर सफेद डुपट्टे का पल्लू सिर पर ओढ़े बादशाह के सामने आये।

बादशाह भी गमगीऩ

आखिर बादशाह ने ही चुप्पी तोड़ी़ बीरबल से बोला- चलो़ मैं तो मरा सो ठीक है पर मेरे बाप दादा क्यों मर खप गये

बीरबल ने सोचा यही मौका है जब बादशाह की घोड़ी बनाई जा सकती है़ सब को सपने की बात पर दुखी कर रखा है और खुद मजे लेकर मन ही मन हॅस रहा है।

बोला- हजूऱ भूख से मर गये।

बादशाह ने कहा-ऐं़ क्या- कह भूख से- हम तो बादशाह थे़ जो चाहा खाया पिया़

क्या मैं भी भूख से मर जाऊँगा नहीं़ नहीं़ साबित करके दिखाएं़ वरना ....

बीरबल- ठीक है़ कुछ मोहलत दे दो।

बीरबल ने एक हवेली बनवाई जिसमें केवल एक कतार में छोटी छोटी ताकें ही ताकें थी।

जब हवेली बन गई तो उसके उदघाटन के लिए बादशाह को बुलाया और उसने भी इस अजीब हवेली का बिस्मिल्ला करना चाहा।

बीरबल ने कहा- हजूर घर पर खाना बनवाया पहले घर चल कर खाना खायेंगे फिर फीता काटेंगे।

बीरबल ने खाना इतना लज़ीज़ बनवाया और इतनी लाजबाब खातिरदारी की कि बादशाह से उठा भी न गया मानो दस दिनों का खाना आज ही खाया हो। खाने के बाद इलाईची पेश की तो बादशाह बोले- अगर इसकी गुंजाइश होती तो एक मोतीचूर का लड्डू और न खा लेता

बीरबल ने मन ही मन कहा- अब आया ऊंठ पहाड़ के नीचे बोला -अब चलते हैं नई हवेली।

बादशाह ने कहा इतना खाया है हिला भी न जा रहा है।

बीरबल ने कहा-पालकी में चलेंगे यो चले यो आये।

बादशाह पालकी में लद गये।

हवेली में घुसते ही पहली ताक में ठंडा गुलाब का शरबत था सोने की छोटी प्याली में

बादशाह ने कहा- हाँ यह चलेगा गला सूख रहा है।

आगे बढ़े तो सोने की छोटी तश्तरी में एक बरख लगा आगरे का पेठा था उसने कहा यह भी चलेगा और गप्प से मुह में रखा।

और आगे बढ़े तो चमचम गप्पा वो भी पेट में।

और आगे बढ़े तो अंगूर वो भी पेट के हवाले

और आगे बीकानेर की एक फक्की भुजिया की ली

और आगे दिल्ली का सोहन हलवा,

दक्षिणी मसूर पाक, लखनऊ की खीर, बनारस का पान,

पंजाब की लस्सी, करांची का हलवा, गूजरात का गाठींया,

पर सब का एक ही निवाला, पेट भर कर कुछ नहीं ।

बादशाह को तीन मंजिली हवेली की एक हजार ताकों से हजार निवाले खिला दिये।

जब बाहर निकले तो बादशाह ने पूछा- बीरबल यह सब क्यों किया

बीरबल बोला- हजूर आपने सब मिला कर 40 सेर का सामान खाया, जब कि घर पर तो इलाईची की जगह नहीं थी।

बादशाह बोला- मैं समझा नहीं, तेरी बात मेरे भेजे में नहीं आई।

बीरबल ने कहा- आप रोज़ 40 सेर खाना कम खाते हो, इसलिये ही तो मरते हो।

बादशाह बोला- धत तेरे की,

काट लिया कान, तू बड़ा सुजान।

00000

जमाना है कि कुत्तों को Doggi कहो़ वरना

तलाक के लिये तैयार रहो़

इमरान खान के पास भी अपना कुत्ता है

उसकी दूसरी बीबी रहम खान के पास भी अपना है

दोनों कुत्तों में पटी नही़ं मामला तलाक में बदल गया़

नई बात नहीं है

1947़ में जूनागढ़ स्टेट भारत में आई़ लेकिन

नबाब ने पाकिस्तान में विलय होने की बात जिन्ना को कही़

तो जमींन तो उठाकर ले नहीं जा सकता था़ जिन्ना ने उसके लिये

40 सीटर हवाई जहाज भेज दिया़

नबाब के पास 40 कुत्तें थे़ उसने उन 40 कुत्तों को हवाई जहाज में ढुँसा

और अपनी 4 बेगमों को हवाई पट्टी पर रोते विलखते भारत में छोड़ गया़

बाद में सरदार पटेल ने उन 4 बेगमों को पाकिस्तान भिजवाया

ο ο ο ο ο

गप्प --

शहर में बोटिग लिस्ट तैयार हो रही थी।

इलेक्शन ओफिसर के सामने एक आदमी को पेश किया गया कि यह अपना नाम 'छिलका राम' बताता है।

उसे पूछा- आप असली नाम बताये।

वह बोला- असली नाम का पता मुझे भी नहीं मालूम़ पर अगर इस नाम से आवाज लगाओगे तो मैं ही बोलूंगा।

इलेक्शन आफिसर ने अपने आदमी को कहा- तो ठीक है

इन का नाम वही लिखलो।

जब वह जाने लगा तो आफिसर ने धीरे से पूछा- कि मेरे को तो बता यह अनोखा नाम कैसे मिला

वह बोला मेरा नाम मैंने खुद चुना।

मैं इतिहास में 400 साल तक पीछे गया तो केवल एक आदमी मिला़

और वह है बीरबल।

इलेक्शन आफिसर का दिमाग चक्कर घन्नी हो गया बोला- हं

उस में तूने ऐसी क्या बात देखी

वह बोला- वही एक आदमी था जो बादशाह अकबर के छिलके उतार सकता था।

अकबर अक्सर कह कर पलट जाता केवल बीरबल ही उसके छिलके उतार कर उसे नंगा करता था और छिलकें उसके हाथ में ही धर देता था

औफिसर- उदाहरण से बता तू मेरे छिलकें मत उतार।

वह बोला- अकबर ने एक बार ऐलान किया जो भी इस ठूठरती सरदी में जमुना के ठंडें पानी में रात भर खड़ा रहेगा और जिन्दा बच जायेगा तो उसे सौ रू ईनाम के तौर पर मिलेंगे।

अगली सुबह

एक ब्राह्मण ठुठुरता बादशाह अकबर के दरबार में आया और बोला आपके ऐलान के मुताबिक मैं रात भर ठंडे पानी में खड़ा रहा मुझें सौ रू दो।

अकबर ने पूछा- तुम जिन्दा कैसे बचे

वह बोला- मैं रात भर आपके महल में जलते रोशनदानों को देखता रहा कि कब सुबह होगी और कब ठंडें पानी से निकलूँ

अकबर ने पलटी खाई- अच्छा तो तुम हमारे रोशनदानों से गरमी लेते रहे। तुम्हें तो सजा मिलनी चाहिए और उसे बंदी बना लिया ।

बीरबल को बादशाह अकबर की जुबान की पलटी पर गुस्सा आ गया पर वह कुछ बोला नहीं मौका ढूंढता रहा।

कुछ दिन निकले

बीरबल अकबर के साथ जंगल की सैर करने गया और काफी दूर निकल गएे। अकबर को भूख लगी़

बीरबल ने कहा मैं अभी आपके लिये खिचड़ी बना देता हूँ ।

अकबर ने कहा- बना ओं पर जल्दी ही बनाना भूख जोर से लग रही है।

बीरबल ने कुछ दूर एक आड़ में एक लम्बा बाँस गाड़ा उस पर एक हंडिया टांगी उसमें खिचड़ी के चावल डालें और नीचे कुछ दूर पर कुछ लकड़ी पत्ते जला कर आग जला दी।

कुछ देर बाद अकबर ने पूछा- खिचड़ी पक गई हो ले आओ।

बीरबल ने कहा- बस थोड़ी देर और लगेगी।

अकबर ने बार बार खिचड़ी माँगी़ हर बार बीरबल ने कहा- बस थोड़ी देर और सबर करें ।

अकबर का सबर टूट गया वह खुद उठ कर वहां जाता है जहाँ खिचड़ी पक रही थी़ और देखता है कि

एक लम्बे बाँस पर हंडिया लटक रही है और नीचे दूर जलती धीमी आग है

यह देख कर गुस्से में लाल पीला हो गया और बोला-

तुम्हारी अक्ल खराब है क्या़

कहाँ बांस पर टीकि खिचड़ी की हंडिया और कहाँ नीचे ठंडी आग़

इतनी सी गरमी से खिचड़ी कब पकने लगी

बीरबल ने झुक कर कहा- हाँ हजूर पक जायेगी़

जैसे आपके महल के रोशनदानों से वह गरीब ब्राह्मण गरमी लेकर जिन्दा रहा और बेचारा सजा भुगत रहा है।

बादशाह अकबर अपनी भूख तो भूल ही गया और बोला- जल्दी चलो़ उसे कैदखाने से बाहर निकालना है और ईनाम के सवा सौ अशर्फी देनी है।

और हाँ़

आज से यह भी मसहूर कहावत होनी चाहिये-

" क्या बीरबल की खिचड़ी है जो जल्दी पक जायेगी "।

00000

\

अक़्ल किसी के बाप की नहीं

जिस में है उससे कोई छिन ले

किसी की ताक़त नहीं ।

(आप से अनुरोध है गहराई में जाए और लुत्फ़ उठाएँ)

एक बूढा मुनीम दस रू पर एक अठ्ठनी ईमानदारी से बचाता था।

हम जब पुराने गहने या बर्तन पलटवाने किसी व्यापारी के पास जाते है तो वह बट्टा मारता है और एहसान धरता है कि आप घर के हो इसलिये हमने आपसे इस में कुछ भी नहीं कमाया।

(अगर आप अठ्ठनी पकड़ लेते है तो बधाई वरना मैं अगली पोस्ट में स्पष्टीकरण दूंगा ।)

ह एक सर्व मान्य धारणा है कि जो नौकरी देता है वह अभिमान रखता है कि मैं जो तनख्वाह दे रहा हूँ उतना यह काबिल नहीं है ।

और नौकर यह अभिमान रखता है मैं अक्लमंद हूँ जब ही तो यह तनख्वाह देता है ।

इस कश म कश की लड़ाई में दोनों चलते रहते हैं ।

कोई एक जब हार जाता है तो नौकरी छोड़ देता है

या दूसरा के दबाब में आकर तनख्वाह बढ़ा देता है ।

एक मिसाल है:

एक सेठ के पास एक मुनीम था, बड़ा ईमानदार था। जिंदगी भर सेठ ने उसे अपने पास रखा ।

एक दिन सेठ मर गया । उसके जवान लड़के ने बाप की गद्दी सम्भाली।

नये सेठ को लगा पिता जी ने दुकान में कुछ नौकर ज्यादा रखे हुए हैं छटनी करनी चाहिए । उसकी आँखों में वह बूढ़ा मुनीम खटकने लगा। एक दिन उसने उसे हाथ जोड़कर घर भेज दिया। पैन्शन का रिवाज प्राईवेट नौकरी में होता नहीं है न कोई देता है न कोई लेता है। बेचारा करता भी क्या, आँखों मैं आँसू भर कर, नये सेठ को आशिश देकर दुकान से नीचे उतर आया।

वह मुनीम घर तो चला गया पर घर चलाने को कुछ तो रकम चाहिए थी।

दो रोज़ बाद, सेठ के पास आया बोला- मैंने आप के पिता जी के पास जिंदगी भर नौकरी करी और उनके पास गद्दी लगा कर बैठता था। आपने नौकरी से निकाल दिया, अच्छा किया। पर आपके पास अभी इस लिये आया हूँ कि आप मुझे तनख्वाह का एक रू भी मत देना और नहीं दुकान के अंदर कदम रखने देना, पर आप लोग जहाँ अपने जूते उतारते हो वहां मुझे बाहर बैठने दो, और कोई काम हो तो बता दिया करना, मैं ख़ुशी ख़ुशी करूँगा ।

सेठ ने सोचा इस में क्या बुरा है फौकट में एक वाचमेन मिल गया, उसे इजाजत दे दी ।

उन दिनों बाजार में रेजगारी का बड़ा तोडा था। 25% कटौती पर मिलती थी। यानि अगर दस रू का नोट लेकर जाओ तो रेजगारी तो साढ़े सात की ही मिलेगी।

सेठ को दस रू की रेजगारी चाहिए थी़ उसने अपने बड़े मुनीम को कहा कि बाहर वह पुराना मुनीम बैठा है उसे दस रू के नोट दो वह जाकर बाज़ार से रेजगारी ले आयेगा़

बड़ा मुनीम उसे एक एक के दस नोट देता है और साढ़े सात रू की रेजगारी लाने की कहता है।

यह बूढ़ा मुनीम जा कर रेजगारी वाले से पूछता है -आठ रू पर कितना बट्टा

रेजगारी वाला कहता है- दो रू का।

मुनीम उसे एक एक के दो नोट देता है बट्टे के़ और आठ रू अलग से दे देता है और आठ रू की रेजगारी ले लेता है ।

साढ़े सात की रेजगारी सेठ को देता है । अठ्ठनी अपनी जेब में रखता है।

न किसी को धोखा़ न किसी से भीख ।

दिन भर में दस फेरे करता है़

शाम को अंटी में दस अठ्ठनी दबा घर आता है ।

अब आप बताओं वह अपनी अक्ल से़ ईमानदारी से काम कर रहा था कि नहीं

अब पहली वाली तनख्वाह से ज्यादा आमदनी होने लगी ।

सेठ के लड़के की वर्ष गाँठ पर 5 रूपये का खिलौना भेट किया तो सेठ का सिर चकराया ।

00000

This Was The Last Time When Netaji Was Caught By Britishers

प्ररिवार में तीन जनें थे

बाप मॉ और बेटा

बेटा जब जवान हुआ तौ

एक दिन बाप ने बेटे से कहा- तेरे को व्यापार सम्भालना चाहिए कमाना चाहिये मेरी कमाई की जमा पूँजी तो कितने दिन चलेगी

लड़का बोला- कमाने की जरूरत ही क्या है। लोग उधार देते रहेंगे हम खाते रहेंगे।

बाप ने पूछा- उधार देने व लेने का अंत भी तो आता है।

लड़का बोला- दुनिया भरी पडी है उधार देने को

आज एक से लो तो कल दूसरें तैयार बैठे हैं उधार देने को।

देने वाला माँगेगा तब कह देगें- जब होगें तब दे देंगे।

या कह देंगे कि उसने पिछले जनम में हमसे उधार लिया था सो तूने इस जन्म में चुकाया था। तेरे को उधार देना है तो ला अब दे।

बस जिंदगी यूँ ही निकल जायेगी ।

बाप लड़के की बात सुनके सुन्न रह गया।

वह दो तीन दिनों तक न खा सका न पी सका। मन ही मन अफसोस करता रहा अपनी औलाद को कैसे सम्भाला जाय।

अंत में

वह एक संत के पास गया और अपनी समस्या कही।

साधू बोला- मैं खुद इस कमजोरी का शिकार हूँ तेरे को क्या हल बताऊँ। मेरी सब उपदेश व शिक्षाऐं मैंनें नही कमाई दूसरों की सुनी सुनाई तुम्हारे को कह दी। मैं तो खुद यह उधार की गठरी बोझल कर रहा हूँ ।

फिर भी साधू ने कहा- एक बात ज़रूर कह दूँ जो मेरे गुरू ने मुझे बतायी थी- कि अगर आदत पुरानी पड़ जाऐ तो उससे पीछा जब ही छूटता है जब आत्म ज्ञान उपजे। दूसरे की दी गई शिक्षा लगेगी ही नहीं ।

व्यापारी घर चला आया ।

गुमसुम होकर बैठ गया ।

उसके एक लड़की भी थी जो सयानी हो गई थी। पिता को चिंता में देख कर पास बैठ गई।

कई-कई बार पूछने पर उसने भाई की विचार धारा सुनाई।

लड़की ने पिता से कहा- मेरा भाई उधार माँग कर जीवन निर्वाह करने को उत्तम समझता है तो उसे आप कुछ मत कहो़ बल्कि उसे उधार माँगने का मौका दो़ जब उसे सब तरफ के रास्ते बंद नज़र आयेंगे तब वह खुद दूसरा तरीका ढूँढ लेगा़ और अक़्ल आ जायेगी।

पिता के सिर से जैसे बोझ उतर गया़ वो उससे बोला- तू ही कोई योजना बना़

लड़की बोली- आप की बोल चाल तो है आपस मे़ं आप उसे कहो- तू मुझे रोज़ पाँच रू लाकर दे। तू कैसे लायेगा यह तू जाने।

लड़के को पिता ने अपनी बात कह दी । लड़के ने भी हाँ कर दी।

लड़का दौड़ा दौड़ा मासी के पास गया़ पाँच रू माँगें़ मासी ने हॅस कर पांच रू उसे दे दिऐ ।

उसने आकऱ बाप के हाथ में पाँच रू रखे और ताने के रूप में मुस्कराया ।

बाप ने कुछ नहीं पूछा कि कहाँ से लाया।

और बेटे से कहा- इन रू को सामने वाले कुंऐ में डाल आ।

लड़के ने वैसे ही किया ।

बाप ने लड़के से कहा- अब तू घर जा।

कल इसी तरह पाँच रू लाना।

दूसरे दिऩ वह़ भुआ के पास गया़ पाँच रू माँगे़ उसने दिये और उसने लाकर बाप की तरफ फैंके।

बाप ने भी कहा- सामने वाले कुंऐ मे डाल आ।

और वह़ रू डाल आता है ।

इस तरह वह लड़का ह़र रिश्तेदाऱ ह़र दोस्त से पाँच रू लाता और बाप को देता और बाप उसीके हाथ से कुंऐ में ड़लवा देता।

यह़ सिलसिला कई महीनों तक चला ।

न बापने कुछ पूछा़ न बेटे ने बताया और न रू लाने में चूक की।

एक दिन ऐसा आया कि लड़के को ऐसा कोई घर न मिला जहाँ से पहली बार रू ला सके़ दूसरी बार वह किसी से लाना नहीं चाहता था़ उसने सोचा- पांच रू की ही तो बात है़ चलो स्टेसन चलते है़ वहाँ मुसाफिरों का सामान उठायेंगे पाँच रू तो मिल ही जायेंगे।

वह स्टेसन गया और उसे आवाज़ देकर एक मुसाफिर बुलाta है और सामान ताँगें में रखने की कहा।

उसने कभी कुली का काम किया नहीं था तो वह पसीने से लतपथ हो जाता है पर उसे पाँच का नोट मिल जाता है।

वह नोट लेकर बाप के पास आता है और बाप रोज़ की तरह सामने वाले कुंऐ में डालने की बात कह देता है ।

आज वह एकदम भड़कता है और बाप से कहता ह कि- क्या कहा

इस नोट को कुंऐ में डाल आऊँ

और भड़क कर कहता है तुम्हें पता होना चाहिए कि आज यह पाँच का नोट मैंनें अपना पसीना बहा कर कमाये हैं और आप इसे पानी में डालने को कहते हो

बाप दुकान से नीचे उतर कर उसे गले लगा लेता है ।

और लड़का भी रोते हुए कहता कि अब मेरे को आत्म ज्ञान हो गया है ।

उधार और कमाई में क्या फर्क है ।

बाप कहता है- ये ले दुकान की चाबी मैं तो तीर्थ यात्रा में जा रहा हूँ ।

o o o o o o o

गप्प गोष्ठी का वार्षिक दिवस था

बच्चे चौपाल पर इकट्ठे हो चुके थे गुरू जी के आते ही सब की फरमाईशें शुरू हो गई

सब ने एक ही आवाज में कहा-

हम तो आज भूत की कहानी सुनेंगे।

उन्हें समझाया भूत प्रेत कुछ नहीं है मन की दुर्बलता है।

पर सब कहने लगे कहानी नहीं तो भूत पर गप्प सुना दो पर होना चाहिए असली भूत।

भूत पर गप्प :

परिवार में

तीन जने थे

पति-पत्नी व एक लडका ।

उन्होंने लड़के को बड़े लाड़ प्यार से पाला। वह कुछ भी बोल जाता तो वे हॅसते रहते। बुरा न मानते।

एक दिन पिता ने पूछा- तू जिंदगी मैं क्या बनेगा

जबाब था " भूत "

पिता मारने दौड़े तो माँ ने बचा

लिया।

पर माँ उसे नानी के पास भेजना चाहती थी जो ज्ञानी औरत थी।

वह नानी के गाँव चला जाता है ।

वहां वह देखता है कि सब लोग डरे डरे से है। सब के घर बंद है।

वह नानी के घर के दरवाजे की कुंडी खटखटाता है। नानी ने दरवाजा खोला और इसे हाथ पकड़ कर अंदर किया और दरवाजा बंद कर लिया ।

उसने पूछा ऐसी कौन सी बात है कि सारा गाँव डर से का ॅप रहा है

नानी ने कहा- यहाँ एक राक्षस आता है जो कोई बाहर दिखता है उसे पकड कर ले जाता है और उसे खा जाता है।

लड़का सब समझ गया और ऐेक योजना बना डाली।

नानी से बोला- नानी मेरे लिये पतली खिचड़ी बना ।

वह खिचड़ी को एक थैली में रख लेता है और पास में पड़ा लोहे का छड़ लेकर बाहर आता है । नानी रोकती है कि उस राक्षस के आने का समय हो रहा है

पर वह मानता नहीं है ।

राक्षस जोर से हॅसता हुआ गाँव में प्रवेश करता है और गली में घूमते लड़के को अपनी झोली में डाल कर ले जाता है

उस राक्षस ने अपने महल में पहुंच कर लापरवाही से थैला एक कोने में फैंक दिया़ यह सोच कर कि जिसको पकड़ कर लाया हूँ खा लेंगे अभी जल्दी क्या है और गहरी नींद में सो गया ।

लड़के मौका पाकर थैले से बाहर निकला और महल की सीढ़ी चढ़ कर उपर ही उपर छत पर चढ़ गया

राक्षस की आँख खुली और भूख लगी तो थैला उठाया तो देखा वह तो खाली है

आदमी निकल कर भाग गया, वह गुस्से से चिल्लाया " अरे आदम, तू कहाँ है "

लड़के ने मोटी आवाज में कहा-

" अरे दुष्ट मैं आदम नहीं- भूत हूँ"

राक्षस घबरा गया, उसने भूत न देखा न सुना, वह तो खुद को ही दुनिया में सब से बड़ा शरीर वाला समझता था।

बोला- क्या तू मेरे से लम्बा है, अगर है तो मेरे पर थूक।

लड़के ने गरम गरम खिचड़ी उपर से उस पर उंडेल दी।

राक्षस के सिर पर जब गरमा गरम घी वाली खिचड़ी पड़ी तो वह उस में लपट गया और पूछता पूछता थक गया ।

राक्षस फिर बोला- " अरे भूत, तू पहले तो छोटा था जब तुझे मैंने उठा कर झोलें में डाला था, अब तू इतना लम्बा कैसे हो गया और क्या तेरे दाँत इतने बड़े है कि तू मुझे ही खा जायगा

लड़के ने कहा- क्या तू मेरे दाँत देखना चाहता है तो देख, यह है मेरा एक दाँत---यह कह कर

उस ने साथ लाई लोहे की छड दनदनाती हुई उस पर फैंकी, जो जाकर उसके सिर में घूस गई।

वह तो दुम दबा कर भाग गया ।

तो बच्चों यह थी भूत पर गप्प ।

अब बताओ इस से क्या सीखा

सब ने हाथ उठाएं

गुरूजी बोले- तुम सब भूत के बारे में जानते हो़ क्या सब ने भूत देखा है

सब बच्चों ने मिलकर कहा- भूत होता ही नहीं है।

गुरूजी बोले- हाँ सही कहा ।

मन का डर ही़ भूत है।

जैसे:

कमरे में अंधेरा है और

एक लडका कमरे में घुसने से डर रहा है कि अंदर खूंटी पर साँप लटक रहा है मुझें काट खायेगा़

उसकी माँ आती है कमरे की लाईट जलाती है तो लड़का देखता है खूंटी पर तो रस्सी लटक रही है। डर गायब।

लडकों ने फिर पूछा- पर डर तो लगा न ।

गुरूजी बोलें- डर लगता है पर तुम मनुष्य हो़ ऐसे क्षणों में धैर्य से सोचो़ उत्तर अंदर से आयेगा ।

हमारे संतों ने कहा है-

धीरज धर्म. मित्र. अरू नारी़

आपत्ति काल परखye चारी।

00000

श्री तेजस पूनिया जी का लेख

चंद्र धर गुलैरी पर लिखा सो पढ़ा।

गुलैरी जी की एक कहानी थी

' उसने कहा था '

मैं जब हाई स्कूल में था हमारे कोर्स में थी उस वक्त इसका मतलब क्या समझते।

पर उम्र के साथ उसका रहस्य खुलता रहा।

आज की पीढ़ी को तो शायद पता भी नहीं है यह कहानी है क्या है और क्यों सौ साल तक सुर्खियों में बनी रही ।

तो मैं आज वही कहानी लिख रहा हूँ जो श्री गुलैरी जी ने लिखी-

" उसने कहा था "

एक लड़का उम्र करीब 12 साल माँ के कहने पर बजार से कुछ खरीदने गया।

उसी दुकान पर एक लड़की नया सलवार कमीज पहने कुछ सामान खरीदने आती है।

उसे देख कर वह लड़का पूछ बैठता है ' तेरी कुडमई (सगाई)हो गई '

यह सुन कर वह लड़की शर्मा कर यह कर भाग जाती है

' धत '

वह लड़का जवान हो गया और फौजी हो गया। उन दिनों लड़ाई चल रही थी फौजियों को छुट्टी से वापस लौटना पड़ रहा था।

रेलवे प्लेटफार्म पर वही बचपन वाली लड़की भी अपने फौजी पति को छोड़ने आई थी। दोनों मिलते है। वह अपने पति का परिचय कराती है। तब उसे पता चलता है उसका पति उसी की यूनिट का सिपाही है तो वह लड़की उसे कहती है- इनका ख्याल रखना।

लड़ाई के अग्रीम मोर्चे पर दोनों की एक साथ ड्यूटी लगी.

उस लडके ने देखा एक सिक्ख अफसर सिगरेट पी रहा है उसे शक हो गया कि वाहै गुरू का खालसा होकर सिगरेट कैसे पी रहा है

वह उसके पीछे पीछे चलता है।

वह नकली सरदार् पहरे पर तैनात उस लड़की के पति पर चाकू से हमला करता है

पर पीछे चलते लड़के ने बढ़के वार अपने पर ले लिया और वह बच गया लेकिन भागते हुऐ नकली सिक्ख use गोली मार देता है।

वापस पलटta ha to जख्मी लड़कa पूछता है- तूने मुझें बचाया क्यों

वह इतना ही कह सका-

" उसने कहा था "

और दम तोड़ देता है।

(यह श्रेष्ठ प्रेम की अनुपम कहानी है)।

०००००

राजा भोज की प्रेम कथा

राजा भोज हिरण को जीवित पकड़ने के लिये भरसक घोड़ा दौड़ाते हैं और घोड़ा भी

स्वामी का लक्ष्य समझ गया था वह उस वेग से दौड़ा कि नदी पहाड़ उॅलाग कर हिरण तक स्वामी को ले जाता है। राजा भोज घोड़े से नीचे उतर कर उसे पकड़ लेते हैं पर वे देखते हैं हिरण ने तो प्राण त्याग दिये

और मरते मरते उसने एक बच्चे को जन्म दिया और वह भी मरा हुआ था। राजा भोज दुखित मन से घोड़े के पास आये तो देखते है वह भी जमीन पर बैठ कर मर गया ।

राजा गहरी व्यथा में था।

इतने में कुछ सैनिकों ने उसे घेर लिया और कहा- तुम हमारे राज के नहीं लग रहे हो तुम बंदी बनाये जाते हो।

राज्य के नियमों के अनुसार भोज पर दो आरोप लगे

1 बिना आज्ञा सीमा पार करना

2 तीन पशुओ की हत्या

जो न्यायाधीश के अधिकार थे उस अनुसार उसके हाथ पाॅव काट कर शहर के परकोटे से बाहर फैंक दिया गया ।

राजा भोज ने देखा पास ही में नदी बह रही है वह रेंगता रेंगता वहां जाकर गीली मिट्टी में लोट पोट होकर खून का रिसाव रोकता है। और पास ही में उगी झाड़ियों के बेर खा कर सो जाता है ।

दूसरे दिन प्रात: भगवान की सस्वर स्तुति करता है ।

राजकुमारी के महल की खिड़की उस जंगल की तरफ खुलती थी वह प्रातःकाल की शीतल हवा का आंनद लेने उसे खोलकर खडी हो जाती है। उसके कानों में वह मधुर गीत पड़ते हैं तो इतनी प्रभावित हो जाती है कि हुक्म देती है उसे जंगल से उठा कर अपने बंदीगृह में डाल दो ।

राज्याध्यक्ष ने कुमारी मृणाल का आदेश माना ।

उसने कहा हमारी सीमा में अनाधिकार घुस आने पर सजा दी जाती है उसे हाथी के पाँव के नीचे डाल कर कुचला जाता है। आप शीघ्र ही वह आदेश दें।

हाथी लाया गया पर उसने भोज को कुचलने से मना कर दिया जमीन पर बैठ कर सूंड़ उठा कर कहा- यह तो पृथ्वी वल्लभ है मेरा स्वामी। मैं इसे नहीं मार सकता। मैं क्षमा चाहता हूँ ।

पर राजा भोज को वापस बंदीगृह में ड़ाल दिया जाता है।

राजा भोज नित्य भजन गाता था। और आठ पहर की अलग-अलग संगीत की रागनियाँ अलाप. रचनाऐं गाता। गुरू से सीखी शास्त्रीय संगीत की रचनाऐं गाता ।

राजकुमारी अपने महल में बैठी उन्हें सुनती तो उसे समय की सुध ही नहीं रहती।

एक दिन उसके प्रधानमंत्री ने कहा- आप महल से बाहर नहीं निकलती हैं और दिन रात बंदीगृह की खिड़की के पास खड़ी रहती हैं यह क्यों

राजकुमारी ने कहा- मुझें उस आवाज़ से प्यार हो गया है जो बंदीगृह से आती है।

प्रधानमंत्री ने पूछा- आपने उसे कभी देखा है

जबाब था नहीं ।

फिर प्रश्न था- क्या आप उसको देखना चाहती हो

जबाब था- हाँ

राजकुमारी को बंदीगृह में लाया गया। राजा भोज मस्ती में दोपहर की रागनी तिलक कामोद की आलाप भर रहा था।

राजकुमारी ने प्रधानमंत्री से कहा- यह जिस हालत में है मैं इसे प्यार करने लगी हूँ ।

प्रधानमंत्री कहा- अब आप मेरी अपराधी हैं। राज्य का कोई नागरिक विदेशी से प्यार नहीं कर सकता ।

आप अपराधी हैं जनता के सामने आपको हाथी के पाँव के नीचे डाल कर कुचलना होगा़

यह मेरा आदेश है।

यह है प्रेम की अमर कहानी।

दोस्ती बड़ी खतरनाक है

रिश्तेदारी से।

जब अच्छी लगती है तो मुकाबला नहीं

रिश्तेदारी बेचारी दूर रह कर

भी बुरी लगती है।

बुरी होती नहीं ।

० ० ० ० ०

पैसा तेरे तीन नाम

परस्या

परस

परसराम।

दुनिया इसी किली पर घूम रही है। चारों तरफ यही माहौल है।

इसे कहानी मत कहो

जग बीती आप बीती कहो।

एक सफल व्यापारी था वह धनाड्य समझदार भी था।

देश विदेश में भी चर्चा का विषय था। अखबारों की सुर्खियों में टी वी इन्टरव्यू

प्रेस कान्फ्रेंस जहाँ देखो उसकी ही बात।

चार न्यूज चैनलस ने इन्टरव्यू के लिये समय माँगा।

उसने सब को अलग अलग समय पर बुलाया ।

पहला संवाददाता चाह रहा था उसकी किशोर अवस्था पर जानकारी दें।

उसने अपनी कमीज उतारी और पीठ दिखाई। काले खून के धब्बे थे़ बोला मैं मजदूर था़ पीठ पर अनाज की बोरिया लादता़ गोदामों में रखता तो शाम को मिलते थे पचास रूपये ।

संवाददाता ने पूछा उस वक्त आपका नाम क्या था

उत्तर था- परस्या

दूसरे संवाददाता ने उसकी जवानी के दिनों की जानकारी चाही। उस ने कहा- कड़ी मेहनत और ईश्वर की कृपा से कुछ पैसा इकठ्ठा हुआ़ व्यापार की समझ आई। एक फैक्टरी डाली। गरीबी की हालत तब नहीं रही।

संवाददाता ने पूछा- उस वक्त आप किस नाम से जाने जाते थे

उत्तर था- परस

तीसरे संवाददाता का प्रश्न था़

आज आप संसार के दस धनी व्यक्तियों में आते हो़ आप किस नाम से जाने हैं

उत्तर था- परसराम

चौथा संवाददाता प्रश्न कर रहा था़ क्या आप की राय मे़ पैसा मनुष्य के चरित्र को ढ़क देता है।

उत्तर था- समाज में मनुष्य न्यून है़ उसका अर्जीत पैसा ही उसका व्यक्तित्व है।

देख लो- किशोर अवस्था से़ आजतक़ मैं एक हूँ पर समाज ने मेरी आर्थिक स्थिति को जाँच कर मेरे को तीन नामों से पहचाना:

परस्या़ परस़ परसराम

उसने सामने दिवार पर लगे संत कबीर के चित्र की तरफ इशारा करते हुए कहा कि

" धन जोबन ऐसे उड़े

जैसे उड़े कपूर.

कर कमाई राम नाम की

मान अभिमान सब धूर।"

00000

जब बादशाह अकबर की महानता को एक वेश्या ने झाड़ दी।

लघु सत्य

मार्मिक गप्प ।

अकबर के दरबार में चुगल खोर भेदू जासूस बात को कारी करने वाले बात का बतंगड बनाने वाले अड़मची भडमची भांड मसखरे हसोड़ फोकट की रोटी बोटी खाते थे।

यह तो उपर वाला ही जानता था एक अंगूठा छाप लूटेरा अकबरया से अकबर कैसे बन बैठा। और महान कैसे कहलाया।

उसके कान में इतलाखोर ने कहा- हजूर वो सामने सीधा सा रियासत दार है उसका इश्क एक लाजबाब वेश्या से है।

बस देर क्या थी

नरम लहजे से बोला- हमारी ख्वाहिश है आप की इश्क का डोला हमारे मिना बाजार की रौनक बढ़ाये। आप रियासत जाऐ और एक महिने में हमने जो कहा उसे अंजाम दे।

बेचारे राव का दम ही न निकला ।

वह रियासत आया उससे मिलने नहीं गया । वही आई।

उसे समझने में देर न लगी ।

बोली- मुझें आपकी परेशानी का सबब क्या है मालूम हो गया है । आप आगरा जाओ मैं आपके पीछे पीछे आती हूँ ।

राव भारी कदमों से अकबर क पास जाता है ।

अकबर का दिल उछल रहा था। मिनाबाजार तो बहाना था। एक ख़ास महल में अदनी सी वेश्या का इन्तजार कर रहा था।

डोला उतरा तनहाई का ऐलान हुआ। दुआ सलाम हुई । अकबर ने हाथा जोरी की शुरूआत की ।

वेश्या ने नकाब उठा कर कहा-

मैं समझती थी अकबर महान है वह तो दूसरो के किये शिकार का मा ॅस खाता है। उसमें वो कोई बात ही नहीं है कि कोई दासी भी अपना दिल उसे दे सके।

तुम्हें मेरा जिस्म मिलेगा मेरा प्यार तो राव है।

कह कर निर्वस्त्र हो गई।

अकबर की जुबान चिपक गई

उसकी नजर सिर उठा ही नहीं ।

०००००

मोटी माया सब तज़ै

झींनीं तजै न कोय़

जो झींनीं तज़ै

दुख काहे को होय।

(कबीर)

तीन बार मुख्यमंत्री रहे

पर आशा तृष्णा न मिटी़

अगर इस जगह उनका लड़का होता तो कहते जा मेरी चमड़ी के सिक्के बना ला।

कुर्सी पर बिठा देते

भीष्म पितामह बन जाते।

00000

-कहानी-

सिद्ध साधू थे़

चाकरी में कई सेवक रहते थे़ इसी आस में कि बाबा की मेहर हो जाये तो चेला बना लें । बाबा जी भी यह बात समझते थे।

एक दिन सब को इकट्ठा किया और बोले- मेरे को चेले की आवश्यकता नहीं है पर सब चारों दिशा में जाओ़ जो कोई अनुभव की कमाई कर के आवेगा़ वह मेरे पास रहेगा।

पर जवाब ठोस हो।

और चार प्रश्नों का उत्तर एक ही हो।

चार प्रश्न हैं

घोड़ा अडे

पान सडे

जिगरे में बाटी जले

विद्या विसरत जाये

cela कौन उपाय

प्रश्न सुनके आधे तो सुन्नीपात की अवस्था में आ गये। कुछ को मिरगी आ गई।

रहे सहे को बाबा भूत लगने लगे। सिर पर पाँव रख कर चम्पत हो गये।

बस एक बचा था़

जिसने बाबा की बात को पकडा- कि “अनुभव की कमाई करो।”

वह उठा और शहर की तरफ चल दिया ।

चौराहे पर पान की दुकान थी़ वह मुट्ठे के मुट्ठे कोरे पान सड़क पर फैंक रहा था और नौकर को गालियाँ दिये जा रहा था । कामचोऱ आलसी़

इसने हिम्मत करके पूछा- पान तो अच्छे हैं फैंक क्यों रहे हो

पनवाड़ी ने कहा- सड़क पर फेंकें पानों को देखो़ बीच बीच में सड गये।

इसने प्रश्न किया- कैसे

उत्तर मिला- हमने पलटे नहीं ।

लड़के के दिमाग की खिड़की खुल गई़ पलट तेरा ध्यान किधर है़

और पलटा तो देखा एक टट्टू सा मरियल घोड़ा उस पर चढ़ा आ रहा है।

तांगे वाला आवाज लगा रहा था़ महाराज बचके मेरा घोड़ा अड़ रहा है।

इसके दिमाग की दूसरी खिड़की भी खुल गई़ कि घोड़ा अड़े

दो बात की कमाई तो करली

सेवक ने आश्रम लौट ने पहले सोचा चले कुछ चक्कर लगाते हैं

रास्ते में पशु मेला लगा था़

वहां कुछ लोगों में विवाद चल रहा था़ एक दूसरे पर भूखें मार डालने का आरोप लगाया जा रहा था़

एक को ही दोषी माना जा रहा था- तूने जलाई है तूने।

वह कह रहा था- तुम भी तो यहीं थे़ जलने से रोक लेते ।

सेवक बीच बचाव के लिये आगे बढ़ा़ पूछा- किस का क्या जल गया़ क्या जान माल की हानि हुई है

जबाब था- महाराज़ वो हानि तो सहन हो जाती है पर भूखा नहीं सोया जाता । अब आप ही फैसला करो़ जिगरे में बाटी इसने रखी़ उनको पलटने का काम इसी का था़ सब बाटीयां जल कर राख हो गई

खायेंगे क्या इसका सिर ।

प्रत्याशी चेले को तो स्वर्ग मिल गया

भागा साधू के पास़ चिल्लाते चिल्लाते़ मिल गया़ उत्तर मिल गया ।

साधू के चरणों में प्रणाम करके कहा- पलटना जरूरी है

साधू ने कहा- उठ़ चार में से तीन तो लाया़ चौथा तू खुद समझ जायेगा़ अगर मेरी दी गई विद्या को रोज पलटता रहेगा तो कभी भूलेगा नहीं ।

चेला तो बना लिया गया पर उसकी आँखों में एक प्रश्न अटक गया ।

गुरु ने कहा- तू मेरी परीक्षा लेना चाह रहा है

तेरे दिमाग में आ रहा है गुरू कि बातें रोज रोज पलटने की क्या जरूरत है

तो सुन-

विद्ध्या का स्वभाव तीन प्रकार का होता है:

चर्म बुद्धि

कम्बल बुद्धि

कुशाग्र बुद्धि

चेला बोला मैं समझा नहीं।

तो गुरू ने स्पष्ट किया- अगर कान छिंदवा लो और उसमें बाली नहीं डालो तो छेद भर जायेगा । यह चमड़ी का स्वभाव है।

कम्बल बुद्धि - यानि कम्बल में किडें लग गये अनेक छेद कर दिये। उस कम्बल को झाड़ के रख दिया फिर अगली सर्दी निकाला छेद उतने ही मिलेंगे न घटे न बढ़े।

जितनी विद्या सीखी उतनी याद रही । न भूला न बढ़ाई।

तीसरी: कुशाग्र बुद्धि

घास का अग्रीम भाग कुश कहलाता है

घास को काटो फिर बढ़ जाता है ।

मैं जितना पढ़ाऊँ उससे आगे पढ़ ।

०००००

खुद का काम खुद करो।

+ कहानी +

एक राजा के एक ही लड़का था जिसे उन्होंने बड़े लाड़ प्यार से पाला पोसा। उसकी हर जरूरत राजा रानी खुद पूरी करते या नौकर चाकर।

बड़ा हो गया पर खुद के हाथ से खाना भी नहीं खाता था। पानी भी नहीं पीता था। टट्टी पिशाब करे बाद दूसरे ही उसे साफ करते थे। मतलब है वह केवल सांस लेता और नौकरों माँ बाप पर हुक्म चलाता था।

राजा दुखी हो गया कई बार गुस्सा भी हुआ तो उसने जहर खाने की धमकी दी। पर वह उससे प्यार भी बेहद करता था उसको मरवा भी नहीं सकता था या देश निकाला दे कर उसे अपने हाल पर छोड़ नहीँ सकता था।

आखिर में उसने अपने गुरु को बुलाकर अपनी समस्या बताई। गुरु ने कहा अगर वह राजी हो जाये तो कुछ दिनों के लिए मेरे आश्रम में भेज दो मैं उसका उतना ही ध्यान रखूंगा जितना आप रखते हैं मैं सब उसकी मरज़ी के मुताबिक़ करूँगा।

राजकुमार गुरु के आश्रम आ गया उसका सब काम गुरु करता और वह भी कराता।

ऐसे कई दिन निकल गये।

एक दिन राजकुमार के पेट में दर्द उठा। गुरु ने दवा दी उसके पास बैठा पेट मसला पर उसका दर्द कम न हुआ ।

गुरु ने कहा- चल तेरा दर्द मैं लेता हूँ ।

राजकुमार बोला- यह कैसे हो सकता है मेरे शरीर का दर्द तो मैं ही भगतूंगा।

गुरु बोला- तेरे शरीर के और धर्म भी तो तू दूसरों से करवाता है चल दर्द भी दूसरों को सहन करने के लिये आदेश कर दें।

राजकुमार को ज्ञान आ गया।

उसका दर्द ठीक हो गया ।

पैदल चल कर माँ पिता के पास आया। पाँव छूऐ।

प्यास लगी थी पास में पड़ी झारी से पानी पीया। प्याले को हाथ से धोकर रखा ।

00000

राज दरबार लगा था़ राजा को उबासी (मुँह खोल कर आलस्य निकालना)आई। तो सब दरबारीयों को भी वैसी ही उबासी आने लगी।

राजा को बड़ा गुस्सा आ गया कि हर एक उस की नकल कर रहा है। उसने हुक्म जारी किया कि उबासी लेने वालों को दिन भर भूखा रखो।

प्रधानमंत्री समझदार था बोला- आप जो फूल सूँग रहे हैं उसे जरा और नाक के पास लेजाये।

राजा ने वैसा ही किया तो उसे एक जोर दार छींक आई।

प्रधानमंत्री ने कहा- अब आप अपने चारो तरफ बैठे लोगों को देखें क्या कोई और भी छींका है क्या

राजा ने कहा- छींकनें वाला तो मैं अकेला हूँ ।

प्रधानमंत्री ने कहा- बस़ यही है असल बात । पहले आप को आई उबासी थी़ जो परिवार वाली थी़ एक तो आएगी तो सब को आयेगी़ किसी के रूके रूकेगी नहीं । चाहे आप फांसी पर चढ़ा दो।

राजा ने पूछा- और छींक

प्रधानमंत्री ने कहा- छींक है निपूती। यह जिस को आती है उसी को आयेगी ।

राजा ने कहा- तो उबासी लेने का कसूर मेरा ही था़ तो चलो़ हुक्म रद्द किया जाता है पऱ यह बताओ उबासी आई तो आई क्यों

प्रधानमंत्री ने कहा- क्यों कि आप पूरा सोये नहीं । आप को कोई चिंता सताती रही।

राजा ने पूछा- वो कौन हैं जो निश्चित होकर सोते हैं

प्रधानमंत्री ने कहा-

क सोये जोगी अवदूत

क सोये राजा का पूत

क सोये बम्भी में साँप

क सोये जिसके माँ न बाप।

(इनके पिछे कोई फिकर नहीं है। ये अपनी मरज़ी से ही उठते है इनको जगाने वाला कोई नहीं होता ।)

०००००

जो व्यक्ति इतना बीमार है कि ठीक होना मुश्किल है उसे ज्यादा तकलीफ न दो उसे डाक्टरों की आम राय से दवा दे कर मार दो

इस व्यवस्था को कहा जायेंगा- ' जीनें का अधिकार '

कानून या संसद कुछ भी पारित करें क्या जनता अपनें स्वजनों को ऐसें मारनें देंगी

इस से ज्यादा इज्ज़तदार ऑंर सरल अधिकार प्रत्येंक शव को दिलाने का कानून पास करो कि दुर्घटना से मरने वालें शव को जलानें या गाड़ देनें के पहले उसके नेंत्र दान हों जानें चाहियें।

उस व्यक्ती ने जीते जी कोई अच्छा काम किया हो या नहीं लेकिन मरनें के बाद उसकी दो आँखें दो अन्धें व्यक्तियों को लगेंगी।

० ० ० ० ०

अगर इच्छाऐं

घोड़ा होती

भिखारी उस पर चढ़ कर घूमते।

:कहानी:

एक राजा रानी के कोई सन्तान नहीं थी।

उन्होंने इच्छा की कि चाहे 5 साल तक ही जिन्दा रहे पर सन्तान हो जाये।

ईश्वर ने सुनी। पुत्र हुआ।

ज्योतिषी से उसकी उम्र पूछी-

उसने कहा- पांच साल ।

राजा को दुःख न हुआ ।

रानी को देने वाले से कुछ और माँगने की इच्छा जाग उठी

जो ठुकरादी गई। जब से यही विधान चला आ रहा है विधाता का।

पुत्र हुआ पांच साल बाद मर जाता है।

राजा को प्रश्न ही प्रश्न सुनाई दिये कि तुझें इस पुत्र से क्या मिला

राजा ने कहा- वह सब कुछ जो अगर वह 60 साल का हो कर मरता तो भी।

मुझें वह बालक पा ॅच साल तक वह मुस्कान निरंतर देता रहा जो मेरे मरने तक मेरी धरोहर है ।

मुझें उसके मरने का दुख नहीं है ।

रानी से प्रश्न किया गया तो वह बोली- माँ पुत्र के स्थूल से प्यार करती है जब ही तो वह बड़ा होता है । मुझें तो पुत्र के मरने का गहरा दुख है।

पर मेरी इच्छा मन ही मन मर गई।

प्रश्न आया वह इच्छा क्या थी

उत्तर था- किसी माँ के सामने उसका पुत्र न मरे। पर नारी में यह इच्छा दुर्बल थी।

उदाहरण:

यमुना नदी में कालिया नाग को मारने कृष्ण कूदे माता यशोदा जानती थी उसका पुत्र मरेगा

अगर उसकी यह इच्छा प्रबल होती कि माता के पहले पुत्र न मरे तो वह कृष्ण से पहले खुद यमुना में कूद जाती ।

रानी बोली- इच्छाऐं अनंत है उपलब्धियां सिमित।

०००००

किस की किस्मत से बच रहे हैं

कौन जानै

क्कहानी क

एक समाज की गोठ (पिकनिक) आयोजित की गई । कुल 30 व्यक्ति थे। वे

पास के जंगल में जाते है वही दाल बाटी बना कर खाने का इरादा कर् चल पडते हैं । वहां पहुंचे तो

मौसम अचानक खराब हो गया। तेज बारिश और कडकती बिज़ली ने सब को जिंदगी से निराश कर दिया ।

वे जान बचा ने लिये एक घने पेड़ के नीचे चले गये् पर बिजली और बारिश तेज होने लगी।

उन 30 लोगों के मन में एक ही विचार आया कि यह विपदा हम लोगों में से कोई एक पापी है वह बाकि के 29 लोगों को भी मार डालेगा।

किसी एक ने मुॅह खोला और मन की बात कह दी । सब की विचार धारा भी यही थी। पर उस पापी को पहचाने कैसे

उन में से एक ने सुझाव दिया कि पास एक सूखा पेड़ है उसे हम में से एक एक आदमी छू ने जाय और बिजली तो खतरनाक गिर ही रही है अगर वह पापी हुआ तो दूर ही मर जायेगा और हम 29 तो बच जायेंगे ।

जैसा उन्होंने तय किया् उनमें से ऐक ऐक जाने लगा। वापस आता तो अपने को धर्मात्मा समझ कर बाकी 29 को पापी समझता। और कहता आप सब मेरी बजह से ही जिन्दा हो

पर यह भी कहता कि कोई एक पापी है जरूर ।

30 में से 29 लोग गये और सही सलामत वापस आ गये।

अब बचा वह एक बेचारा, उसको तो सब ने पापी मान ही लिया था, सब बोले यही हमारी तकदीर खा रहा है इसे उस पेड़ तक भेजने की जरूरत ही क्या है इसे हमारे से दूर करो और धक्का दे कर पेड़ के नीचे से भगा दो।

फिर भी उनमें से एक बोला- कानून अपने हाथ में मत लो,

वह पापी है इसे उस पेड़ के नीचे ही मरने दो। यह कह कर उसे धकेल कर उस पेड़ को छू कर आने को कहते हैं ।

वह भारी कदमों से जाता है जैसे आत्महत्या करने जा रहा हो, क्योंकि बाकि 29 ने धर्मात्मा होने का सबूत दिया है ।

वह उस सूखे पेड़ के नीचे आ कर हाथ जोड़ कर ईश्वर से मरने की प्रार्थना करने लगा ।

इतने में आसमान से भयंकर बिज़ली गिरी और उस घने पेड़ पर भी गिरी जिसके नीचे 29 लोग खड़े थे, और वे सब झुलस कर मर गयें ।

उस एक की तकदीर से 29 बचे हुऐ थे ।

00000

जिन को अपनी जड़ से शर्म आऐ

उनके पत्तों को पानी देने का क्या

फायदा ।

=कहानी=

इन्कम टेक्स के चीफ कमिश्नर के चेम्बर में बड़ी कम्पनियों का मालिक खन्ना व उसका सी ऐ उसके सामने बैठें हैं ।

कमिश्नर- हा ॅ तो खन्ना जी आप की सब कम्पनियों में नुकसान दिखाया है पर कृषि आय दो करोड़ हुआ जिस पर टेक्स बनता नहीं ।

क्या यह खेती आप करते हैंऋ

खन्ना ने कहा- मेरे पिता जी कराते हैं । आप कहें तो बुलाऊं बाहर बैठें हैं ।

कमिश्नर- हा ॅ

एक 75 साल का बूढ़ा कमरे में बुलाया गया ।

उसके पा ॅव में पुरानी चप्पल ऊंची-ऊंची धोती पुराना कमीज व पराना कोट जो लगता था उसका नहीं है पहने था।

कमिश्नर ने कुर्सी से उठ कर टेबुल के साईड पर आया और उसके पा ॅव झुक कर छूऐ।

खन्ना व सी ऐ बैठें रहे।

कमिश्नर ने उन्हें खाली कुर्सी पर बैठने को कहा तो खन्ना बीच में बोला- नहीं नहीं सर

बाहर ठीक है और बाप से कहा- बाहर बठो।

कमिश्नर अपनी कुर्सी पर आ बैठा ।

खन्ना से बोला- दो करोड़ के मुनाफे का कास्तकार आपके उतरे पुराने कपड़े पहनकर आया।

मैं आप पर टेक्स चोरी की सब दफाऐं लगाता हूँ ।

आप चाहें तो अपील कर सकते हैं ।

00000

कहानी न सही़

सुनने में हानी भी नहीं ।

एक राजा को कहानी सुनने से बेहद नफ़रत थी।

कई कहानी कारों को मौत के घाट उतार चुका था।

एक ने सोचा- राजा के मुॅह पर कहानी शब्द आना चाहिए ।

वह दरबार में जाता है और बोला मैं कुछ सुनाने आया हूँ ।

राजा बोला उसका नाम जुबान से निकला और तुम्हारी मुंडी उड़ी।

वह बोला- अगर आप की जुबान पर वह शब्द आया तो

राजा बोला- अगर हार गया तो

हर ऐेक की सुनूंगा और हार ईनाम में दूंगा ।

कहानी कार ने " कहान " माता का स्मरण किया और शुरू हो गया-

आपके राज्य में खूब खुश हाली है।

राजा बोला- वो तो है।

कहानी कार ने कहा- पर समय खराब आ रह है।

राजा बोला- कैसे

कहानी कार बोला- एक टिड्डी दल आयेगा और अनाज खा जायेगा ।

पर एक टिड्डी एक दाना ही खायेगी ।

राजा बोला- परवाह नहीं एक से मैं डरता नहीं । आने दो।

कहानी कार कहता है-

एक टिड्डी एक दाना

राजा कहता है - आगे बोल।

वो फिर कहता है-

एक टिड्डी एक दाना ।

सुबह की शाम हो गई वह

बोलता रहा -

एक टिड्डी एक दाना ।

एक हफ्ता निकल गया वह

कहता रहा-

एक टिड्डी एक दाना ।

महिना निकल गया वो कहे

जाये- एक टिड्डी एक दाना ।

राजा का धैर्य जबाब दे रहा था

बोला- एक टिड्डी एक दाना की की बात कब खत्म होगी

वह बोला - जब तक आखिरी टिड्डी नहीं खा जाती है

राजा बोला- मैं थक गया हूँ

मेरे पर दया कर इस से अच्छा होगा तू मुझें कोई कहानी सुना दे।

कहानी कार बोला- राजा जी

आखिरी टिड्डी आई थी दाना खा कर उड़ गई। अब बचे हैं- दो।

एक कहानी कहने वाला

एक कहानी सुनने वाला

ये दोनों बने रहे।

00000

ढाई आंखर प्रेम के़

पढ़े सो पड़ित होय।

1950 में

विश्व कहानी प्रतियोगिता में प्रथम चयनित कहानी ।

विदेशी धर्म प्रचारकों ने सोचा कि हमें और भू खण्डों में जाकर अपना धर्म फैलाना चाहिए ।

वे एक टोली बना कर जहाज़ लेकर निकल पड़ते हैं।

बहुत लम्बी सफर के बाद उनको एक टापू नज़र आया ।

वे जहाज उसके किनारे पर लगा लेते हैं । जहाज से उतर कर कुछ दूर अंदर जाते हैं तो उनको तीन बूढ़ें आदमी दिखाई दिये। जिनकी उम्र का ये लोग अंदाजा नहीं लगा सके

उन तीनों की दाड़ीयां सफेद थी और जमीन तक लटक रही थी।

इन्होंने उनसे उनके धर्म के बारे में पूछा तो वे बोले हम कुछ गुन गुना कर आकाश की तरफ देख लेते हैं ।

इन लोगों ने उनको कहा आप ईश्वर की प्रार्थना यह कह कर करो और ये ये बोला करो।

यह टीम उनके पास छ: महिने रही़ और प्रार्थना आदि सब सीखा दी। वे भी सब याद कर

चुके़ और इनके सामने दोहराते थे।

जब इनको यह यकीन हो गया की ये हमारे धर्म के पक्के मानने वाले हो गये है तो अपने

जहाज में चढ़े और अपने वतन को लौटने लगे।

कुछ ही दूर इनका जहाज गया होगा कि इन्होंने देखा वे तीनों बूढ़ें पानी पर दौड़ लगा कर आ रहे हैं और हमारे को रूकने का इशारा कर रहें हैं। इन्होंने जहाज रोका।

जब वे पास आये तो इन्होंने उनसे पूछा क्या बात है उन तीनों ने नीचें खड़े खड़े एक ही स्वर में कहा-

आप वो सब वापस समझा दो जो समझा कर आये थे।

उस धर्म प्रचारकों की टीम ने सोचा- ये अनपढ़ जंगली पानी पर चल कर आये तो ईश्वर इनसे कितना घुला मिला है और इन्होंने किस भाषा में बात की होगी।

शायद वे ढ़ाई अक्षर प्रेम के रहे होंगे।

०००००

टेढ़ी उँगली से घी निकलता है।

कहावत है

पर क्यों बनी किस लिये बनी यह अपना अता-पता कुछ भी न छोड़ गई और यह भी है कि किस को क्या पड़ी जो इसके बखीये उधेड़े जबकि लोगों से अपनी दाढ़ी की आग ही नहीं बुझती तो वो क्या दूसरों के घर की आग बुझाने आयेगा।

लघु कथा

एक परिवार में कुल चार प्राणी थे

पति पत्नी एक अठारह साल का लड़का और दादी।

पति की सब से पटती पर लड़के से नहीं उसको देखते ही जैसे आग बबूला हो जाता और लड़का कुछ बोल पड़े तो बस उस दिन सब का उपवास ही समझें।

दादा की एक पुरानी छड़ी थी टांड से उतर जाती और लड़के पर एक दो तो रसीद हो ही जाती। कोई दिन ऐसा नहीं जाता कि बाप बेटे में महाभारत न छिड़ा हो।

दादी का तों लाड़ला था वहीं बीच बचाव करती और झपट्टे में आ जाती जब जाकर बाप का ग़ुस्सा कम होता।

दादी को एक तरकिब सूझी।

जैसे ही पोता उसके पास आया और दादी की कमर पर झूला कि दादी ने पास में पड़ी छड़ी पोले पोले हाथ से उसके कमर में जड़ दी उपर से गालियाँ दी सो अलग।

पोता तो हक्का बक्का हो गया, समझ ही नहीं पाया कि यह वही दादी है या और, उसके आँसू निकल आये।

दादी की गाली-गलौज बदस्तूर मशीन गन की तरह पोते पर फ़ायरिंग कर रही थी,

लड़का डर कर बाप के कमरे में जा छिपा।

लड़के का बाप बाहर आया पर उसकी हिम्मत न हुई कि माँ से पूछें कि हुआ क्या था। वह वापस अपने कमरे में चला गया। दादी भी चुप हो गई।

उस दिन बाप लड़के से नहीं झगड़ा ।

अगले दिन दादी ने पोते को आवाज़ दी, लड़का सहमा सहमा आया, दादी ने फिर वही ड़ाट फटकार, गाली-गलौज शुरू कर दी। लड़का उल्टे पाँव बाप की गोद में जा छिपा।

बाप आया बाहर, और माँ से पूछा कि कोई गलती की मेरे लड़के ने। दादी चुप।

उस दिन भी बाप बेटों में कोई कहा सुनीं नहीं हुई ।

तीसरे, चौथे, पाँचवें दिन दादी का पारा चढ़ा हुआ, पोता बुलाने पर न आये तो दादी उसे ढूँढ लायें और ज़मीन पर बेंत फटकार कर चिल्लाये।

इतने ही दिन बाप और बेटा लाड़ प्यार से रहे।

एक दिन बाप आग बबूला होकर माँ के पास आया और बोला- चल तेरे को चाचा के यहाँ छोड़ आता हुं। तू मेरे लड़के से बहुत झगड़ा करती है।

दादी ने पूछा- तू तो लड़के से मेरे से ज़्यादा झगड़ता है।

बाप बोला- झगड़ता था, पर अब नहीं, अब मैं उसे बहुत प्यार करता हूँ।

दादी मन ही मन मुस्काई,

चलो घी तो निकला. चाहें टेंढी उँगली से सही।

०००००

गुदड़ी के लाल

बच्चों की गप्प गोष्ठी के सदस्य बने हो तो कुछ तो योगदान देना ही पड़ेगा।

पर इनकी यह शर्त भी माननी पड़ेगी कि गप्प ऐसी हो कि सब के गले उतर जावे।

तो सुनो-

बादशाह अकबर उस दिन बड़े गम्भीर सोच में पड़े थे बार बार एक हाथ की मुठ्ठी को दूसरे हाथ की हथैली पर मारे जा रहे थे।

जैसें ही बीरबल दिखा उछल कर बोले-मैं तुम्हारी ही राह देख रहा था कि तुम सामने आ गये।

बीरबल ने मन में सोचा क्या बादशाह मेरे को भूत समझता है कि जब याद करो सामने आ जाये और गरदन झुका कर कहे- हुक्म करो मेरे आका

गुलाम हाजिर हैऔर

 समझ गया कि आज मेरा खाया पीया निकलने वाला है। बोला- मेरे लायक कोई खिदमत जहाॅपनाहऋ

बादशाह बोला- वो जो हीरे पन्ने की खदान अजमेर के अरावली पहाड़ो में तुमने चालु कराई थी और तुम्हारे कहने पर उसकी खुदाई का काम औड़ जाति के मजदूरों को ही दिया था।

बीरबल ने कहा- हाँ याद है पर वहाँ से तो हीरे पन्ने निकल रहे है पर उसकी फिकर क्यों

बादशाह बोला-फिकर यों कि हमें सिर्फ छोटे टुकड़े ही मिलते है जबकि बड़े दागिने वो औड़ चुरा कर ले जाते है।

बीरबल ने कहा- तो उनकी तलाशी ले लो़ वो जाति तो वहीं मैदान में खुले आसमान के नीचे सोते हैं और फटी पुरानी गुदड़ी ओढ़ कर सोते है।

बादशाह ने कहा- मेरे में भी अक्ल है तुम्हारे से ज्यादा़ मेरे आदमियों ने कई बार उनकी तलाशी ली है पर कुछ हाथ न लगा। मेरी अक्ल तो इसी बात पर हैरान है कि उनके पास न घर न बार न ठाव न ठिकाना़ बस़ ले दे कर एक गुदड़ी है़ वो छिपाते कहा ॅ है। क्या पेट में खा जाये हैं

बीरबल ने कहा- इस में क्या बड़ी बात है़ मैं यहाँ बैठा बैठा बता सकता हूँ कि वो हीरे लाल जवाहरात कहा ॅ छिपा के रखते हैं ।

बादशाह बोला- बीरबल जल्दी बोलो़ मैं और मेरे होशियार कारिंदे-सिपाही सब घास खाये बैठें हैं। चोरी होती है पर माल बरामद नहीं होता ।

बीरबल ने कहा- गुस्ताखी माफ़ हो़ यह वादा करैं कि उन को सजा नहीं देंगे़ तो माल मिल जावेंगा़ और हजूऱ उनके जवान बेटों को नौकरी भी मिल जायें ।

बादशाह ने कहा- तुम्हारी सब शर्तें मंजूर है पर माल तो बरामद कराओ।

बीरबल ने कहा- आपके होशियार कारिंदे सिपाही उनकी तलाशी लेते थे पर उनकी गुदड़ी को नहीं सम्भालते थे। उनकी गुदडियों को मंगवाया जाय।

दरबार में गुगडियां आई़ उनके टा ॅके खोले गये़ दरबार की फर्श पर हीरे बिखर पड़े ।

दूसरी शर्त के मुताबिक उनके लडकों को नौकरी भी मिल गई।

बादशाह ने उनका नाम रखा

" गुदड़ी के लाल "

०००००

जब काज़ी (जज) का कुत्ता मरा तो गाँव के लोग शोक जताने आये

और जब वे खुद मरेतो कोई नहीं आया।

ये है सामाजिक मान्यता ।

इस कोरोना ने इन टसवे बहाने वालों को आजाद कर दिया ।

न बिमार की पूछ तांछ

न शव यात्रा में मुँर दिखाई

न तीये की बैठक

और आप कर भी क्या सकते हो।

जिन सदियों पुराने

रिवाजों संस्कारों को आप कम भी न कर सके उनको तीन महीने में जड़ से साफ कर दिया।

नई पीढ़ी को जैसे आजादी मिल गई न मिले बुजुर्गो के फूल न गंगा में प्रवाह।

यह है कोरोना का आशावादी पक्ष।

अब लो निराशावादी पक्ष-

सरकार का दखल घर में घुस कर रोगी को छिन कर ले जाना और घर पर ताला लटकाना।

नव दम्पति में संसय् कहीं मार न डालें यह् डायन। भाड़ में जाये प्यार व्यार ।

आदत पड़ गई अब् अपने बर्तन धोओ झांडू फटकारो्

सिद्ध हो गया

अपना हाथ जगन्नाथ ।

00000

eक बार

बादशाह अकबर

ने बीरबल से कहा- बीरबल मेरी दाढ़ी के बाल सफेद हुए जा रहें हैं क्या वजह है

बीरबल ने कहा-हजूर सब मयादी मामला है ।

बादशाह ने कहा-मैंने किसी से उधार लिये ही नहीं किसी से मयाद का कोल करा ही नहीं तो मैं क्यों सजा भुगतूं।

बीरबल ने कहा- आप याद करें आपने चार उधार लिये थे तीन चुका दिये अब चौथा बाकि है वो अपना व्याज वसूलने रोज आता है और आप की दाढ़ी में हाथ डाल कर ले जाता है और उसे आप अपने हाथ से देते हो।

और कहते हो आपने मयादी उधार नहीं ली।

बादशाह ने कहा- बीरबल

मैं आप कहो जिसकी कसम उठाने के लिये तैयार हूॅ मैंने ऐसा कोई मयादी वादा नहीं किया। अगर आप याद दिला दो तो मान लूंगा ।

बीरबल ने कहा- पहला मयादी उधार

आपका लडकपन

दूसरा आपका अल्लड़पन्

तीसरा आपकी जवानी़

ये आप देना नहीं चाहते थे

पर उम्र से मयादी वादा था

आपको देना पड़ा।

बादशाह ने सोचा और हकीकत याद करके घबरा गया। हाँ जवानी की याद है मैं देना नहीं चाहता था पर उम्र छीन कर ले गई।

बोला- बीरबल मुझें चौथे उधार से बचा। उसका व्याज कैसे दे रहा हूँ यह तो बता

बीरबल ने कहा- हजूर चौथे की फिकर न करें उम्र को मयाद याद है न एक सांस कम् न आधी सांस ज्यादा।

रही बात व्याज की़

तो आप दाढ़ी का सफेद बाल रोज तोड़ते हो और उसे दे देते हो।

बादशाह ने कहा- बीरबल्

तेरी और मेरी दोस्ती की मयाद मत तय कर् सदियों तक लोग हमें याद करते रहे और लुत्फ़ उठाते रहें।

०००००

स्कूल टीचर ने अगर 2 x 2 = 4 पढ़ाया

तो गलत क्या किया

अब अगर प्रिंसीपल का लड़का 2 x 2 = 22 पर अड़ा रहे

तो टीचर को तो नौकरी छोड़नी पड़ेगी

अब अगर टीचर

दो महिनें का चढ़ा वेतन (एक हजार रू. प्रति माह)और

दो महिनें का एड़वान्स नोटिस वेतन माँगती है

यानी 2 x 2 = 22 हज़ार

तो गलत क्या किया

00000

एक फूल की चाह

चाहे देव का श्रंगार बनू

या प्रेमिका का हार बनू या शव पर अर्पित उपहास बनू

निर्णय भाग्य पर छोड़ दिया

पर अभिलाषा मन में उमड़ रही

योवन की देहरी पार करूँ।

कली थी माली का मन ललचाया था

प्रहरी बन का ॅटों ने कैसे बचाया था

झनझड आ ॅधी तूफानों ने धमकाया था

पर मैं सिहरती एक अभिलाषा ले जग में आई हूँ

इन क्रूर निगाहों से बच कर

जीऊंगी जीवन भर पूरा

भाग्य विधाता की धमकी से ड़र कर

नहीं निश्चय बदलूंगी मेरा

फूल बनू

फूल रहू

जग जैसी रहे भावना

बाजार में बिक जाऊंगी। ०००००

बीरबल बादश अकबर के दरबार में कैसे घुसा और कैसे उसके मुँह लग गया ।

-गप्प -

अब्दुल फजल अकबर का बचपन का लंगोटिया दोस्त था और इसी नाते वह अपनी रोटी सेंक रहा था। अक्ल के नाम से दिमाग में भूसा भरा था।

एक रोज अकबर ने उससे कहा-तुम सिर्फ और सिर्फ मेरी चापलूसी करना जानते हो और कुछ नहीं । अरे भाई

कुछ गाली गिलोच करा करो कुछ पटकम पछाड़ किया करो कुछ नहले पर दहला लगाया करो। हँसी मजाक भी मुझें पसंद है और तुम मुँह पर ताला लटका कर रखते हो।

चलो कोई बात नहीं कोई बंदा ढूंढ कर लाओ।

अब्दुल फजल ने गाँव गाँव

ढूंढी पिटवा दी कि ऐसे बंदे की जरूरत है जो बादशाह को गाली दे सके।

नारनौल का एक लफ्गां आवारा लड़का बीरभान

रोज बाप की दुल्लती खाता पर नकटे का नाक काटो उतना बढ़ जाता ने सोचा चढ़ जा बेटे सूली पर राम करे सो होय या इस पार या उस पार

लगाते है तकदीर का जुआ।

जा निकला आगरे की तरफ।

उस दिन बादशाह अकबर ने अब्दुल फजल से कहा कि दरबार का सब काम निपट गया है अब दरबार बरखास्त करो।

फजल ने कहा- बस़ दो बंदे और हैं आप से मिलने आये हैं।

बादशाह ने कहा उनको साथ ही बुला लो़ देंखे क्यों आये हैं

फजल उनको अंदर बुला कर बादशाह को कहता है यह पगड़ी वाला अरबी घोड़े का सौदागर है़ और दूसरे को मैं नहीं जानता ।

बादशाह ने कहा चलो पहले सौदागर से बात कर लेते है। लडके को एक तरफ कर दो।

सौदागर ने कहा- आप के लिये एक अच्छी नस्ल का घोड़ा तजबिज किया है ।

बादशाह ने कहा ठीक है किमत क्या है॰

सौदागर ने कहा एक लाख अशर्फी

बादशाह ने ख़जानची को हुक्म दिया कि इस को रकम दे दो।

सौदागर लम्बी सलाम भरता दरबार छोड़ कर चला गया ।

अब बारी आई बीरभान की़

बादशाह ने पूछा -तू लड़के क्या जानता है

लड़के ने कहा- मैं गाली बकना जानता हूँ पर सुनने वाला नाराज़ नहीं होता मुस्कराता है ।

बादशाह ने कहा अचम्भे की बात है। चलो कल तुम मुझे गाली देना अगर मैं नहीं मुस्कराया तो गरदन कट जायेगी ।

लड़का सलाम कर दरबार छोड़ कर चला गया ।

बादशाह को नींद नहीं आई कि ऐसी उस लड़के में क्या खूबी है कि लोग उसकी दी गाली पर गुस्सा न होकर मुस्कराये। सोचते सोचते नींद आ गई।

अगली सुबह

दरबार में उस लड़के को बुलाया गया । और कहा बता तेरा हुनर।

लड़के ने कहा- गुस्ताफी माफ़ मेरी गाली सुनो- आप हद दर्जे के बेवकुफ हैं।

बादशाह ने कहा यह तो बहुत बड़ी गाली है कौन अक्लमंद यह गाली सुनना पसंद करेगा।

अब सुन

अगर कोई मुझे यही गाली मुझें दे और साबित न कर सके कि मैं बेवकुफ हूँ तो मैं तो उसकी गरदन काट दूंगा।

लड़के ने बेफ्रिकरी से कहा- अगर वह साबित कर दे कि आपने कोई अक्लमंदी नहीं की तो।

बादशाह ने कहा फिर मैं उस की गाली पर नाराज न होकर मुस्कराउंगा।

लड़का बोला- में दूबारा यह बेवकुफ की गाली आप को दे रहा हूँ ।

सारा दरबार सन्नाटे में आ गया। सब के मुँह से निकला- या अल्लाह ख़ैर कर

लड़के तू तो गया जान से।

बादशाह का भी मुँह भी फक पड़ गया ऐसी गाली तो उसके बाप ने भी न दी थी। जो यह बदतमीज़ भरे दरबार में मुझे दे गया ।

वह गुस्से से लाल पीला होकर बोला- जल्दी साबित कर।

लड़के ने निर्भीकता से कहा- मेरे सामने की बात है कल जो सौदागर आप को घोड़ा बेच गया क्या वह घोड़ा था या गधा ऋ

बादशाह ने कहा- घोडा ही होगा और मैं क्या जानूं मैंने उस पर चढ़ कर नहीं देखा

लड़के का दूसरा सवाल -क्या आप उस सौदागर का नाम गाँव हैसियत पहले से जानते थे।

बादशाह ने कहा- कतई नहीं।

लड़के ने कहा- आपने घोड़ा देखा नहीं उस सौदागर को पहचानते नहीं और इतनी बड़ी रकम उसे दे दी। क्या यह अक्ल के दुश्मन का काम नहीं यानि उंचे दरजे की बेवकूफी का नमूना है।

बादशाह कुछ ठंडा पड़ा।

बोला- वो तो आयेगा और घोड़ा भी लायेगा ।

लड़का बोला- तो फिर मैं आपका नाम बेवकुफों से हटा कर उस का नाम लिख दुंगा ।

बादशाह समझ गया उससे बहुत बड़ी गलती हो गई। वह लड़का सही कह रहा है। वह उस पर नाराज न होकर मुस्कराया ।

बीरभान जैसे निखट्टू की नौकरी पक्की

बीरभान से बीरबल हो गया.

अब्दुल फजल का मुँह लटक गया ।

०००००

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र (ज्यू) और मल्लिका

हिन्दी साहित्य जगत में यह एक महान चरित्र हुआ है ।

उन्नीसवीं सदी में जब खड़ी बोली यानि हिन्दी भाषा को राजा शिव प्रसाद दास व राजा लक्ष्मण सिंह ने बाँट कर अपनी अपनी शौरत का एक अंग बनाना चाहा, तब वाराणसी के एक अग्रवाल कुल के धनिक परिवार के हरिश्चंद्र नामक युवा ने हिन्दी का चीर हरण रोका, व अभय दान दिया।

उनका मानना था हिन्दी को युवा तो होने दो, और फिर इसे अपने भाग्य पर छोड़ दो।इस में सातों रस विद्यमान है- श्रंगार, प्रेम, हास्य, वीर, वियोग,विरह, रिति, छायावाद, सब हैं पर इसके रसिक तो सामने तो लाओ, फिर इसके घुँघरू में संगीत की लय सब के मन को आकर्षित करेंगी।

वे पैतृक धन के उत्तराधिकारी थे कई पीढ़ी बैठ कर खाये तो भी कमी नहीं थी, पर हिन्दी की सेवा में सर्वत्र समर्पित कर दिया।

इन की कहानी:

बंगाल मे् ब्रह्मसमाजीयों की उच्च जातियों में चलन था् लड़की के मासिक धर्म शुरू होने के पूर्व उसका विवाह् कर दें् वहीं कन्या दान कहलायेगा् अन्यथा हाथ पिले पीलेकरना कहलायेगा। कन्या दान को महा दान की भी श्रेणी प्राप्त थी।

मल्लिका के पिता ने भी इस पुण्य का लाभ लेने हेतु अपनी नाबालिग लड़की का कन्यादान एक संभ्रांत परिवार में कर दिया। पर विधाता ने भाग्य में क्या लिखा है् यह कौन पढ़ पाया है। वह रीति रिवाजों के अनुसार केवल पाणिग्रहीन के बाद पिता के घर ही रही् बड़ी होने पर सुसराल जाती् पर कुछ ही समय बाद समाचार आया कि उसके पति की अकाल मृत्यु हो गई है और वे लोग ऐसी कुलक्षणी बहू को स्वीकार नहीं कर सकते ।

मल्लिका के पिता भी धार्मिक ढ़ले टकसाल के थे् फूल सी कोमल ह्दय की कली को बाल विधवा समुदाय में धकेल कर उसका मुख भी देखना नहीं चाह रहे थे् उसको वाराणसी के ब्रह्मसमाजी द्वारा संचालित विधवा आश्रम में भेज देते हैं । जहां का जीवन अत्यंत एकांकी व निरस रहता है। यम नियम साधना की कसौटी पर ज़िंदगी तिल तिल कर के गुजरती है। वह वहाँ दसवाँ साल गुज़ार रही थी और वह अठारह साल में प्रवेश कर रहीं थीं । लेकिन उसके विचार और आचार केवल प्रभु के प्रेम में ही मग्न रहते थे।

हरिश्चंद्र के पिता बड़े उदार स्वभाव के थे् वे चाहते थे उनका लड़का अच्छा व्यक्ति बने। पढ़ाई के साथ वह अन्य गतिविधियों में भी रुचि रखें् उन्होंने उसे स्काउटींग में जाने की अनुमति दी

उस दिन सौ मोती अमावस्या का गंगा स्नान था् घाटों पर भारी भीड़ का अंदेशा था।

प्रसाशन ने सुचारू व्यवस्था के लिये स्कूलों से स्काउटस माँगें थे। हरिश्चंद्र को भी टोली में जाने का अवसर मिला था। उसे उस जगह लगाया गया जहाँ वह भीड़ को बाहर निकलने का रास्ता दिखा सके व नियंत्रित कर सके।

श्वेत साड़ी में एक महिला उसके पास आती है और कहती है- श्रीमान् हमारा ग्रुप बाहर जाना चाहता है पर भीड़ बहुत है हम इसमें फँस गये तो सब तितर बितर हो जायेंगी और बाहर निकल कर प्रतिक्षा करनी पड़ेगी जब तक सब मिल नहीं जाती तो कोई और उपाय है ऋ

उस युवक को यह समझने में देर नहीं लगी कि ये साध्वियाँ हैं ।

पहले आदर से झुकता है फिर कहता है- महिलाओं के लिये अंदर आने का तो अलग रास्ता है पर जाने का अलग से रास्ता शायद नहीं है। पर एक उपाय है कि आप हाथ के इशारे से सब को रस्से के सहारे सहारे यहाँ तक बुला लो मैं आप को महिलाओं के प्रवेश मार्ग के किनारे किनारे चला कर बाहर निकाल दूँगा पर मेरे को अपने लीडर से इजाज़त लेनी पड़ेगी।

वह उन्हें बाहर निकाल देता है और वह उसे जाते वक़्त धन्यवाद कहती है।

वह समझ नहीं पाया यह इतने से काम के बदले क्या कह रही है

वह नादान युवा पूछ बैठता है यह धन्यवाद क्या है

वह युवा अल्हड़ लड़की मुस्कुराते हुए कहती है-इतनी सी भी हिन्दी नहीं आती

यह खाने की चीज़ है

और कटाक्ष करके चली जाती है।

यह हरिश्चंद्र का और मल्लिका का प्रथम साक्षात्कार था।

वह उस सौ मोती अमावस्या के दिन दिया गया हिन्दी का दान का मोती जीवन भर खाता रहा पहचानता रहा और जीता रहा।

सारी उम्र वे हिन्दी लेखकों को आर्थिक सहायता करते रहे।

गद्य पद्य नाटक कहानी उपन्यास आलोचना समालोचना के प्रकाशन में नैतिक आर्थिक सहायता देते रहे।

ख़ुद भी हिन्दी में लिखते थे।

नाटक़ कहानियाँ उपन्यास़ शेरों शायरी़ ग़ज़लें सेक्सपीयर के नाटकों के अनुवाद़ हास्य़ रासो जो नृत्य पर आधारित हैं बहुत लिखा।

प्रसिद्ध उपन्यास प्रबोधनी़ अंधेर नगरी़ भारत दुर्दशा़ राधा कृष्ण का प्रगाढ़ प्रेम़ उनकी रास लिलाएं प्रसिद्ध हुई़ ब्रज के लता मोटी कुं है़ वैदिक हिंसा हिंसा न भवति़ अनेकों रचनाएँ लोगों का मत था संत तुलसी दास जी के बाद इन्होंने ही काव्य साहित्य की सुध ली है।

समाचार पत्रों का संपादऩ व्यवस्था़ वितरण का भार उठाया।

महिलाओं के लिये उनकी रुचियों से भरा अर्ध मासिक निःशुल्क मेगजीऩ

वाराणसी के घर घर में छापेंखाने़ हर लेखक का सम्मान ़ईनाम़

पत्थर पत्थर के नीचे से लेखक़ कवि़ प्रतिभा उजागर होने लगी उनका आर्थिक भार उठाते उठाते जेबें ख़ाली हो रही थी। कोई लेखक ऐसा न था जिनका भार हरिश्चंद्र पर न था। लोग इन्हें विक्षिप्त कहने लगे थे।

उनको हरिश्चंद्र न रह कर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र कहने लगे।

हिन्दी जगत में वे हर दिल अज़ीज़ हो गये थे ।

सम्मान समारोहों में उनको भीष्म पितामह से सम्मानित किया गया ।

मल्लिका के लिये वे 'ज्यू' ही बने रहे। उनके मन मंदिर में मल्लिका की ही मूर्ती स्थापित रही अगाढ़ प्रेम की धारा ' राधा '

सर्वत्र लक्ष्मी सम्पदा हिन्दी जगत को अर्पण कर माँ शारदा के चरणों में संघर्ष को विराम देते हुऐ मात्र ३४ वर्ष की आयु में १८८४ में संसार से विदा हो गये।

मल्लिका का ज्यू साथ छोड़ गया़ उसका प्यार उस दिन विधवा हो गया था।

हिन्दी जगत के क्षितिज पर नव प्रभात हो गया था।

00000

कवि कालिदास का जीवन भी एक रोचक कहानी है

और उसके द्वारा लिखे गये नाटकों की कल्पना भी ऊंचे आकाश की उड़ान है।

'शकुन्तला ' नामक कहानी श्रेष्ठ श्रेणी की कल्पना है।

सामर्थ्य तो नहीं है पर प्रयास करता हू॔ इस महान कहानी के बिखरे मोती को समेटने का।

ऋषि पुत्री शकुन्तला को अपने उपवन से गहरा लगाव था। वह एक एक कली़ फूल़ लता से कई समय तक वार्तालाप करती और उनको शीतल जल पिलाती। मुस्कराते पौधें ही उसके मित्र थे।

एक दिन उसने देखा कि एक नव विकसित धवल गुलाब के फूल पर एक भौंरा बैठा उसके पराग का रसास्वादन कर रहा है इसकी आहट से उसकी तंद्रा टुटी तो वह उड़ गया़ पर

उसका रसीक स्वभाव कन्या के कमल रूपी मुख को स्पर्श करने में आतुर हो गया ।

वह मधुर गुंजन करता कभी उसके गालों के निकट आ जाता़ वह उसे हाथ से उड़ाती तो दूर जा गिरता और यह मृगया की तरह भागने का प्रयास करती तो वह सम्भाल कर उठता और रास्ता रोक लेता ।

शकुन्तला उपवन के हर पेड़ की आड़ में छिपी पर वह भौंरा तो उन्मुक्त हो गया इसके रूप का उन्माद इतना गहन हो गया कि उस की गुंजन दूर तक जा रही थी। यह भी परेशान हो गई़ हल्की हल्की पसीने की बूंदें इसके मुखमण्डल पर उभर आई।

000

उस समय देश पर दुष्यंत नामक एक युवा राजा राज्य करते थे। वे शिकार पर निकले तो उनके कानों में भौंरें की गुंजन पड़ी जो एक लय में एक दिशा से आ रही थी। वे उस संगीत मयी गुंजन से अनुमान लगा कर उस जगह जा पहुंचे जहां भौंरा शकुन्तला को परेशान कर रहा था।

राजा ने एक हाथ के झटके से भौंरे को जमीन पर गिरा दिया।

शकुन्तला घबराई हुई थी वह डरी हुई थी। दुष्यंत की सहायता से कुछ राहत मिली तो वह अचैतन्य स्थिति में अपना सिर उसके सीने पर रख देती है।

वह अनुपम सुन्दर थी और उसका अपने वक्षस्थल पर लगा शिश जिसमें काले मेघों से बाल व वेणी में लगे चमेली के फूलों से निकलने वाली मधुर सुगंधने उसे उन्मत्त बना दिया । उसने हाथ से उसका मुखड़ा देखा और अगम्य गहरी नीली झील सी आॅखों को चूम लिया।

यह प्रथम दृष्टि का प्रणय था।

वे गंधर्व विवाह कर लेते हैं (यह प्रकृति की साक्षी में किया गया विवाह होता है) ।

ऋषि ने भी स्वीकृति दे दी।

राजा दुष्यंत कुछ माह आश्रम में रहे। उपहार स्वरूप शकुन्तला को अपनी अंगूठी देते हैं । वह भी कहती है मैं इसे हमेशा अपने पास रखूंगी।

राजा दुष्यंत अनमने मन से कुछ अवधि बाद अपनी राजधानी लौटने की इच्छा ऋषि के सन्मुख रखते हैं और अनुरोध करते हैं कि आप शीघ्र ही राजधानी आयें और प्रजा के सामने वैदिक रीति से विवाह समपन्न कराये।

000

वो घड़ी भी शीघ्र आ गई जब

शकुन्तला को बाबुल का घर छोड़ कर अपने ससुराल जाना था।

उसकी सहेलियां भावुक हो कर मिली। गायें हिरण खरगोश तोतें मैना सब उदास थे। पेड़ पौधें लताऐं निष्प्राण से हो गये थे। सब की आॅखों से खुशी के आॅसू झर रहे थे। सब दरिया तक आये और शकुन्तला व ऋषि को नाव में बैठाकर वापस लौट गये।

शकुन्तला का मन पिया मिलन की कल्पना में आकाश में उड़ रहा था वह दरिया के पानी से खिलवाड़ कर रही थी ।

प्रेम अग्नि को शांत करने के लिये दरिया के पानी के छिंटे मुख पर डाले जा रही थी़ उसे सुध ही नहीं रही कि कब साजन की दी गई अंगूठी अंगूली से निकल कर दरिया में जा गिरी।

000

राजा दुष्यंत का दरबार लगा था । सेवक नमस्कार कर संदेश देता है कि बाहर एक युवती और एक ऋषि आप से मिलने आये हैं। राजा उन्हें सादर लाने की अनुमति देते हैं।

शकुन्तला लाज शर्म से दौहरी हो गई कि पति के दर्शन इतने लोगों में आॅख उठा कर कैसे करूँगी। वे जब मुझें देंखेगे तो वे आलिंगन में लेकर राज

सिंहासन पर मुझें ले जायेंगे ।

और घोषणा करेंगे - प्रजाजनों स्वागत करो अपनी महारानी का। सुहागनियाॅ मंगल आरती उतारेंगी।

इन्हीं कल्पना में घीरि वह असुध सी पिता के कंधे पर झूल रही थी।

जब उसके कानों में ये शब्द पड़े-

ऐ ऋषि वर और ऐ संभ्रांत महिला़ आप कौन है आप को मेरे से क्या काम हैऋ

शकुन्तला का कल्पना का आकाश खंडित हो पाताल में जा गिरा। उसका पति उसे पहचानता भी नहीं है। मेरे उदगारों पर दरबार में तिरस्कार की हॅसी उड़ रही है।

मैं गला फ़ाड कर कह रही हूं मैं आपकी पत्नी शकुन्तला हूँ मेरे खोख में आप का राज कुमार पनप रहा है। आप यह मेरे साथ भरे दरबार में कैसा उपहास तिरस्कार कर रहे हैं ।

राजा अनजान मूर्ति वद बैठा सुन रहा था। वह बोला- ऐ नादान महिला़ अपने पर काबू रखो़ विवेक से काम लो। मैं जब भी किसी से कोई वार्ता करता हू ॅ तो प्रमाण के लिये उसे मेरी अंगूठी देता हूँ जो साक्षी का काम करती है।

आप विवाह जैसे पवित्र समबन्ध का मजाक नहीं बनाये और न मेरे को आप के अंदर पल रहे भ्रूण का पिता कहने का साहस करें ।

शकुन्तला ने आवेश में कहा- सही कह रहे हैं आप हर कौल-मकौल़ वार्ता पर आपकी अंगूठी की साक्षी देती है। आपने मुझें भी एक व्यापार का विषय समझा था़ राजा हो ऩ ऐसे खिलवाड़ करते रहते हो। मैं भी एक स्वाभिमानी नारी हूँ आप की साक्षी यह अंगूठी आप को लौटा रही हूँ ।

यह कह कर वह अंगूली से अंगूठी उतार कर राजा की तरफ उछालना चाहती थी कि आश्चर्य में पड़ गृई़ उसकी अंगूली में अंगूठी नहीं थी।

शकुन्तला अपने पिता से बोली- बाबा़ चलो़ अब मैं यहाँ कोई प्रमाण नहीं दे सकती ।

अगर एक निर्दोष आत्मा मेरे में न पनप रही होती तो मैं यही आत्म दहा कर लेती।

000

शकुन्तला कुछ महीने बाद इस देश को एक पुत्र रत्न देती है।

ऋषिनाना ने नामकरण किया

नाम रखा भारत ।

उसी प्रतिभा शाली बालक से हमारे देश का नाम पड़ा

भारत वर्ष ।

ॐॐ **000** ॐॐ

कहानी का रोचक आश्चर्य-जनक सुखद उपसंहार ।

राजा दुष्यंत के राज दरबार में एक मछुआरा आता है और एक अंगूठी भेंट करता है। कहता है मेरे जाल में एक मछली फँसी थी। उसे मैंने चीरा तो यह अंगूठी उसके पेट में थी। इसमें जड़े मानक मोती

हीरें जवाहरात देख कर विचार आया कि आपको ही भेंट करूँ। गरीब हूँ कुछ ईनाम चाहता हूँ ।

राजा ने अंगूठी ली उसे मुॅह माॅगा ईनाम दे दिया ।

जैसें ही राजा ने अंगूठी को स्पर्श किया वह अचेत होकर भूमि पर गिर पड़ा । उसकी मति स्मृति होस हवास उसमें लौट आये। वह दिवारों से सिर फोडना चाह रहा था उसके मुॅह पर एक ही शब्द था

" शकुन्तला " " शकुन्तला "

लेकिन वह तो जा चुकी थी सदा के लिए। उसे यह भी याद न रहा कि कौन सी दिशा मैं आश्रम था वह विक्षिप्त हो गया। केवल उसे शकुन्तला का आकार याद रहा।

वह अच्छा चित्रकार था उसने साकार कल्पना से शकुन्तला का एक चित्र बनाया जिससे वह पागलों की तरह बातें करता ।

उसके मंत्री ने सुझाव दिया- राजन आप मन बहलाने के लिए प्रकृति का आंनद लो आखेट शिकार पर जाओ।

आपके पास विमान है आकाश में भ्रमण करो।

दुष्यंत ने मंत्री की सलाह मानी और विमान में शकुन्तला का चित्र रख लिया ।

शकुन्तला ने और नाना-ऋषि ने उस बालक को धनुष बाण की उत्कृष्ट शिक्षा दी। उसे शेरों के साथ खिलाते थे। कहावत यथार्थ रूप ले रही थी ' होनहार बलवान के होत चिकने पात '

एक दिन बालक भारत ने देखा आकाश मार्ग से एक शिकारी उसके शेरों पर तीर चला रहा है।

बालक को

क्रोध आया नीचे से एक वाण ऐसा छोड़ा

कि शिकारी के धनुष की प्रत्यंचा ही काट दी।

राजा दुष्यंत को जीवन में प्रथम बार कोई प्रतिद्वंद्वी मिला जिसका निशाना इतना सुक्ष्म और सटीक था कि धनुष की डोरी को वाण से काट दे और वह भी पृथ्वी से आकाश में ।

वह विमान से नीचे उतारता है चारों तरफ देखता है कोई परूष नहीं दिखा। केवल एक बालक सामने था। वह उसकी तरफ बढ़ता है।

बालक दूसरे वाण से उसके पाँव में लता और घास की रस्सी फेंक कर उसे वही रूकने का आदेश देता है और कहता है एक कदम भी आगे बढ़ा तो प्राण खो बैठेंगे।

दुष्यंत हतप्रस्थ हो जाता है बालक में साक्षात शिव के दर्शन हो रहे थे।

वह बालक विमान को आश्चर्य से देखता है उसके पास जाता है तो उसकी माँ का चित्र देखकर भयंकर क्रोध में धनुष पर वाण चढ़ा कर इसे मृत्यु देना चाहता था।

इतने में शकुन्तला वहां आ जाती है और भारत को रोक लेती है।

दुष्यंत नतमस्तक हो शकुन्तला से कहता है यह अंगूठी गंगा में प्रभावित कर दो इसने मेरी सब स्मृतियाँ छीन ली थी।

00000

हातिम ताई़

रहम दिल था़

जरूरतमंद के आॅसू पोंछने में जान की परवाह भी न करता था।

उसकी यह नियत उसे शौरत की बुलंदियों पर ले गई। हर दिल अजीज हो गया।

बादशाह के कानों तक बात गई़ तो खुन्नस पड़ गई। बदला लेने पर आमदा हो गया ।

जाहिरी तौर पर उसका कोई कसूर था नहीं़ पर उससे जिरह कौन करै। उसने कई दफाऐं लगा कर उसे कसूर वार करार दे डाला।

हातिम ताई तक खबर पहुंची़ तो वह गिरफ़्तारी से बचने के लिये जंगल में जा छिपा ।

बादशाह ने उसको पकड़ कर लाने पर भारी ईनाम का ऐलान कर दिया ।

हातिम ताई एक झोंपड़ी के पिछे छिप गया। पर अंदर चल रही बात सुन सकता था़

एक औरत की अपने शौहर से बात थी- हम इतने बूढे हो गये है जंगल की लकड़ी शहर कैसे ले जाकर बेचें। खायै क्या

मर्द बोला- मैं क्या करूं

औरत ने कहा- बादशाह ने हातिम को पकड़ कर लाने पर भारी ईनाम का ऐलान किया है चलो उसको पकड़ लेते हैं।

मर्द बोला- मैं उसे पहचानता नहीं हूँ और न उस नेक दिल बंदे को पकड़वाना चाहता हूँ।

हातिम ताई उनके सामने आ जाता है।

कहता है- मैं ही वह हूँ जिस पर ईनाम है। मुझें दरबार में ले चलो।

मर्द माना नहीं

पर औरत ने आँख पर ठीकरी रख ली। उसकी खबर बादशाह को दे दी

०००००

किस्सें कहानियों का सरताज़

हातिम ताई ।

ने अपने जीने का मकसद बनाया कि लोगों का दिल बहलाता रहूँगा।

बेशुमार व बेहतरीन से बहतरीन किस्सें हैं उसके़ जैसें भारत के कालीदास के हैं जिन की कल्पना सातवें आसमान से उंची थी।

आऔ़ हातिम ताई के एक किस्से की शुरूआत करते हैं।

यमन के बादशाह की इकलौती लड़की को ऊंट की सवारी का शौक बचपन से था़ बड़ी हो गई पर शौक कम न हुआ। उसके घुड़साल में एक से एक बढ़ कर ऊंट थे। वह खुद भी अच्छी सवार थी।

दौड़ते ऊंट पर सवार हो जाना तो उसका बांऐ हाथ का खेल था ।

उसने एक जलसा रखा जिस में ऊंटों की नुमाईश रखी। उस मे़ं गाँव का एक अल्हड़ नौजवान अपना ऊंट लाया और उसके कई कारनामे दिखाये।

शहजादी ने कहा- मेरे एक ऊंट से दौड़ में जीतो तो जाने।

वह बोला- मंजूर है पर मेरे ऊंट की एक टांग बांध कर दौड़ाऊंगा और मैं इस पर बैठूंगा नहीं खड़ा रहूँगा । शहजादी हैरत में पड़ गई़

दोनों बातें सुन कर कि कोई पागल है यह मुमकिन नहीं है ।

उस मुकाबले में देहाती जीत गया। और शहजादी का दिल भी।

बादशाह ने कहा- जो चाहे ईनाम माँग ले।

उसने कहा- आपकी लड़की के साथ जीता हूँ इस से शादी कर दो।

बादशाह ने कहा- मेरी भी एक शर्त है अगर उसे पूरा करोगे तो मेरा आधा राज भी दे दूंगा।

देहाती नौजवान ने कहा- सुना ड़ालो। पूरा करना तो रब के हाथ् कोशिश मेरी ।

बादशाह ने कहा- समुन्दर में एक टापू है वहां के परिंदे पानी में गोता लगा कर मुर्गी के अंडे के बराबर के मोती लाते हैं अगर एक मोती ला सकते हो तो तुम्हें दामाद ही नहीं लड़का भी मान लूंगा ।

वह अल्लाह का नाम लेकर निकल पड़ता है साथ लेता है अपना ऊंट और जा पहुंचा समुन्दर किनारे।

उसने देखा बड़े बड़े बाज़ खेतों में चरते गाय भैंस घोड़ों को पंजों में जकड़ कर समुन्दर के पार लेजा रहे हैं। वह समझ गया ये उसी टापू के परिंदे हैं जो अपने बच्चों के खाने के लिये जानवर पकड़ कर ले जाते हैं।

उसने अपने ऊंट को समझाया और खुद को उसके पेट के नीचें बांधा। थोड़ी देर में एक बड़ा परिंदा आया और ऊंट को पंजों में जकड़ कर ले उड़ा।

एक दिन पूरा उड़ा। शाम होते होते होते वह एक टापू पर उतरा और ऊंट को गिरा दिया ।

वह लड़का समुन्दर के पानी में ऊंट के संग जा छिपा।

अगली सुबह वे दोनों एक घने पेड़ के नीचे आ जाते हैं। वह देखता है कि वहां बड़े बड़े मोती बिखरे पड़े हैं। वह दौड़ कर एक मोती उठा लाता है।

उसने बचपन में अपनी नानी से एक कहानी सुनी थी कि एक सुरख़ाब नाम का परिंदा है जो सच्चे दिल से याद करो तो इंसान की मदद को आता है।

उसने पूरे तहे दिल से उसे याद किया तो एक लाल परिंदा आसमान से उतरा और उसे व उसके ऊंट को ले जा कर यमन में बादशाह के महल पर छोड़ देता है ।

****

बैठना़

तो भाइयों के बीच

चाहे बैर ही हो।

अंग्रेजी में भी कहावत है

भ्लेद ेि तहच्कििएर तहान ्ढ्ढातएर।

एक पंचतंत्र की कहानी:

एक शेर को शौक पैदा हो गया कि गाँव की तरफ जाना और जोर जोर से दहाड़ना़

गाँव वालें ड़र के भाग जाते़ और जो गिर जाता उसे खा जाता।

पर शेरनी ने देखा शेर कुछ दिनों से गा ॅव की तरफ जा ही नहीं रहा है। तो शेर ने कहा कि उस गाँव में दो सगे भाई रहने आ गये है इसलिये नहीं जाता।

शेरनी को बड़ा अचम्भा हुआ कि शेर हो कर आदमी से ड़र गया ।

वह कारण जानने की जिद कर बैठी।

शेर ने कहा- मेरे दहाड़ने से लोग भागते है और जो गिर जाता है वह अकेला रह जाता है उसे मैं खा लेता हूँ ।

अब अगर उन दो भाइयों में से एक गिर गया तो दूसरा भागेगा नहीं़ वह उसे उठायेंगा और मेरा सामना करेंगा।

उसके खून के उबाल से मैं हार जाऊंगा

00000

बिन मांगे मोती मिले़

माँगे मिले न भीख।

यह कथा एक जैन मुनि जी कही हुई है।

एक विधवा के एक पुत्र था जब बड़ा हुआ तो उसे सलाह् कौन दे़ माँ ने कहा दूर के एक गाँव में मुनिवर आये है वे ज्ञानी है उनसे जाकर अपनी बात कह् वे मार्गदर्शन देंगे तो अपना भला हो जायेगा ।

लड़का चल पड़ता है।

रात हो रही थी उसने आश्रय लेने के लिये एक द्वार खटखटाया़ एक स्त्री निकली जिसने इसकै आग्रह पर सोने की जगह दे दी। सुबह् जब जाने लगा तो स्त्री ने इस से प्रश्न किया कहा जा रहे हो़ इसने अपना लक्ष्य बताया तो वह् बोली मेरी लडकी के बारे में पूछना कि वह् गूंगी है और कब शादी होगी।

दूसरे दिन चला़ फिर रात हो गई़ एक दरवाजा खटखटाया़ इस बार एक सेठ का घर था।

वही आग्रह् वही अनुमती़ वही सुबह् का प्रस्थान। उस का एक पश्न था कि रू धन बहुत है पर गाँव में मान नहीं है् तो मुनि महाराज से कुछ उपाय पूछना।

तीसरे दिन वही दिन का सफऱ वही रात़ वही आग्रह।

इस बार घर मालिक था एक पहलवाऩ वह् भी अपनी समस्या रखता है कि बल तो है पर लोग बलवान नहीं मानते़ तो मेरा उपाय मुनिवर से पूछना।

चौथे दिन वही दिन का सफर और रात हो जाना और किसी द्वार पर दस्तक देना। इस बार एक पंडित जी थे। जाते वक्त इन्होंने समस्या रखी कि विद्या बहुत सीखी पर गाँव का राजा मान सम्मान नहीं देता और गाँव वालों को मैं कोई इस काबिल नहीं समझता कि उनके बुलाने से मैं उनके किसी

शुभ काम में जाऊं लिहाजा गरीबी भयंकर है। मुनिवर से मेरे बारे में पूछना ।

पांचवे दिन वह मुनि के सामने आ बैठा। इसके पहले वह कुछ कहे मुनि जी ने कहा-

मेरा सामर्थ्य कुल चार प्रश्नों के उत्तर देने का है अब आप अपनी समस्यायें सुनाओ।

लड़का बड़े असमंजस में पड़ गया कि चार समस्याएं तो उन चार की ही है जिन्होंने उसे आश्रय दिया तो मैं उनकी पहले पूछू या मेरी क्योंकि मुझे केवल चार समाधान ही मिलेंगे और मैंने उनको कहा था कि मुनि जी से पूछूंगा।

अंत में वह यह निर्णय लेता है कि मेरी बात नहीं कहूँ ।

वह चारों की समस्याऐं कह देता है।

मुनि ने कहा-

1- पंडित से कहो विद्या का अभिमान न करें । राजा प्रजा सब को समान समझें ।

2 बल निर्बल की रक्षा हेतू है

3 धन का दान करें

4 जिसकों देख कर वह उसका नाम बोले तो वही उसका पति होगा ।

लड़का मुनि जी को प्रणाम करके घर लौटना शुरू कर देता है। चार दिन का वापसी सफ़र था।

प्रथम रात् वह पंडि्त के ठह्रा

उसे मुनि का वचन सुनाया। इतने में गाँव का एक ह्रिजन आया और बोला- पंडित जी बड़ी प्रतीक्षा के बाद मेरे पुत्र हुआ है आप मेरे घर पधारें और बालक का नामकरण करें। पंडित जी को मुनि की बात याद आई् वे ह्रिजन के साथ निकल पड़े । सारा गाँव अचम्भा करने लगा । कहने लगे हम भी बुलायेंगे। बात राजा तक गई वह बोला- आज से राजपुरोहित पंडित जी होंगे।

लड़का जाने लगा तो पंडित जी ने कहा आप के उपकार के बदले मैं मेरी आधी विद्या तुम्हें देता हूँ ।

दूसरी रात वह पहलवान के घर रूक कर मुनि का संदेश देता है।

उसके घर के पिछें गरीब किसानों की झोपड़ियाँ थी वहां से रोने की आवाजें आ रही थी। दोनों ने देखा कुछ गुंडे उनको मार रहें हैं। उसे मुनि की बात याद आई् कि बल है तो निर्बल की रक्षा करो् वह कूद कर गया और किसानों को छुड़ाया। सबने उसको रक्षक की उपाधि दी ।

वह जाने लगा तो पहलवान ने कहा आप ने मेरी प्रतिष्ठा बढ़ाई है मैं मेरा आधा बल आपको देता हूँ ।

तीसरी रात् धनी को मुनि का संदेश देता है ।

वे बातें कर ही रहे थे कि गली में कुछ लोग जोर जोर से बोल रहे थे् कुछ कह रहे थे ' चलो '

कुछ कह रहे थे ' कोई फायदा नहीं '

थोड़ी देर में सब धनी के घर में घुस आते हैं उनमें से ऐेक बोला- हम सब बाजार में एक प्याऊ बना रहे हैं चंदे को निकले है आप दोगें नहीं पर हमारा फर्ज है आप से मांगे।

धनी को मुनी की बात याद आई कि दान देने से धन और बढ़ता है और समाज में प्रतिष्ठा बढ़ती है। उसने कहा- आप प्याऊ बड़ी बनाऐं सब मैं दुंगा । सब की आँखें झलक गई।

लड़का जाने लगा तो धनी बोला मुनि का संदेश अगर तू न सुनाता तो मेरा दान देने का मन नहीं हुआ करता था पहली बार मेरा भर्म टुटा है और देख अभी अभी मेरे से माल लेने के लिये नये व्यापारी आये हैं मैं मेरे धन का आधा तुम्हें देता हूँ ।

वह चौथी रात उस स्त्री को सूचित करने तथा विश्राम के लिये दरवाजा खटखटाता है

दरवाजा खुला तो उसकी लड़की ने खोला और उसका नाम लेकर जोर से चीख मार कर अंदर भाग गई। वह माँ को कह रही थी सुरेश आया है जल्दी आ।

पहले तो माँ को विश्वाश ही नहीं हुआ की मेरी लड़की कैसे बोल सकती है पर दरवाजे पर लड़का खड़ा था और वह मुनि महाराज का संदेश सुनाता है तो वह कहती है तू ही मेरी लड़की से शादी कर ।

वह कहता है आप आकर मेरी माँ से बात करें ।

वह माँ के पास जाता है और कहता है कि मैं तो मेरी बात मुनि देव जी को कह ही नहीं सका।

माँ ने चारों के आर्शीवाद को सुना तो कहा- विद्या़ बल़ धन और बहू सब तो मुनि महाराज ने बिना कहे दे दिये हैं।

० ० ० ० ०

बादशाह अकबर को अभिमान हो गया था कि लोग खुदा की प्रार्थना में भी मेरा ही नाम लेते हैं

(अल्लाह हो अकबर)

उसे समझाये भी कौन् किस की मौत आई है कि अकबर तू नहीं कोई और है।

वह जिस गाँव का था वहाँ उसके बचपन का दोस्त रहता था वह भी अनपढ़ ही था। वह मस्जिद के ईमाम को कहा करता कि तुम सब मेरे दोस्त की रोटी बोटी खाते हो जब ही तो अकबर अकबर चिल्लाते हो। ईमाम हँस देता ।

एक बार उसका भारत आना हुआ वह जिस से पूछे वही पता बता दे। वह भी फूल कर कुप्पा हो गया कि सारे लोग उसे जानते हैं यानि उसका ही दिया खाते है तो बजाते हैं ।

वह महल में आ जाता है

खूब खुश थे दोनों ।

अकबर उसके सामने ही नवाज़ पढ़ता और अल्लाह हो अकबर कहता

एक दिन दोस्त ने पूछा- तेरे अलावा भी कोई दूसरा अकबर है क्याॠ

जबाब मिला है उसने ही तो मुझें यह सब ठाठ बाठ दिये हैं। मैं मेरी नवाज़ में उसी से तो सब कुछ माँगता हूँ ।

दोस्त जाने की तैयारी करने लगा तो बादशाह् ने पूछा - किसी चीज की जरूरत हो तो मा ॅग ले।

दोस्त बोला- जब तेरे पास ही सब कुछ माँगा हुआ है तो तेरे से क्या मा ॅगना। मैं उसी से माँगुंगा जिसने तेरे को सब दिया है ।

० ० ० ० ०

एक और विचारनीय भूलभूल्या:

99.99% लोग चक्कर खाते हैं ।

अगर शक हो आप भी आजमालो ! ! !

कालेज होस्टल में यह रिवाज रहता है कि रविवार को चार छ: घंटे आप बाहर घूमने जा सकते हैं ।

तीन लड़के (तहरएए दिएितस नहीं) मस्ती करने शहर में निकलते है और यह तय करते है कि खायेंगे कुछ भी पर जो खर्चा होगा उसे " टोमी शेयर" करेंगे। यानि खर्चा तीन भागों में बट जायेगा।

वे एक होटल में गये़ कुछ खाया पिया़ बिल आया तीस रू़ तीनों ने बैरा के सामने दस दस रू निकाले और उस को हाथ में थमा दिये़ और बाहर निकल गये।

बैरा ने तीस रू मैनेजर को दे दिये। पर मैनेजर ने देखा कि इन तीनों का बिल तो 25 रू का है वह बैरा को कहता है कि वे लड़के अभी बाहर नहीं निकले हैं जाकर 5रू लौटा दे़ और एक एक के पा ॅच नोट उसे दे देता है।

क्योंकि बैरा ने देखा था कि वे तीनों अपनी अपनी जेब से दस दस रू निकाल कर बिल चुका रहे थे़ तो अगर मैं इन्हें पा ॅच रू लौटाउंगा तो ये बराबर बाँटेंगे कैसे ऋ इसलिये तीन नोट दे देता हूँ तो ये एक एक रू बा ॅट कर जेब में रख तो लेंगे।

उसने दो रू अपनी जेब में रखे और तीन रू 'सोरी' बोल कर दे दिए ।

उन्होंने भी सोचा कि चलो नौ नौ रू का खाया पीया। यानि

9□3=27 का बिल बैठा।

बैरा को बात हजम नहीं हुई कि क्या बच्चों से tip लूं।

वह मैनेजर से कुछ मिनिट की इजाजत ले कर होटल के आया तो देखा तो वे दूर नहीं गये थे़ और आवाज लगा कर उन्हें रोका और कहा- मैंने दो रू रख लिये हैं आप लेलो़ उन्होंने कहा कि तुम रख लो।

वे होस्टल चले जाते हैं ।

उन तीनों में से एक की खोपड़ी तेज चलती थी़ उसने दोनों को बुलाया और कहा-

हमनें होटल का बिल दिया

9□3=27

बैरा के पास 2 रू

 द्दद्दद्दद्द

हुऐ 29 रू

तो फिर 1रू क्या भूत खा गया ॠ

(आप भी बच्चों की मदद करो)।

o o o o o

कह चकवा कोई बात कटे न रात।

सुन चकवी एक बात़

देश निकाला उसे मिले

जो कहे खरी खोटी बात।

(चकवा चकवी पक्षी होते हैं जो रात होते ही अलग अलग डाल पर जा बैठते हैं ।

चकवे को केवल एक प्रभात का भविष्य मालूम होता है जिसे चकवी पूछने का अधिकार रखती है)

पंच तंत्र कहानी

एक राजा के सात लड़कियां थी। वह उन सब को बुला कर

पूछता है- बताऔ़ तुम्हारी तकदीर का मालिक मैं ही हूँ या भगवानॠ

छ: लड़कियां कह देती है- आप हो। अगर आप पालन पौषन न करें तो हम तुरन्त मर जावै। हम जिन्दा ही आप की कृपा से है।

राजा खुश हुआ ।

सातवी लड़की ने कहा-

आप मेरे पिता है पर में मेरी तकदीर का खाती हूँ ।

राजा को बात सुन कर भयंकर क्रोध आया और बोला- जो अभी तक खाया वो तो मेरा था।

बालिका ने शान्ति से कहा- वह भी मेरी तकदीर का था जो आपके राजस्व में आता रहा और आप उसे मेरे पर खर्च करते रहे।

यह सुन कर राजा क्रोध से काॅपने लगा और प्रधानमंत्री को बुला कर कहा इस लड़की को मृत्यु दंड दें। उसने सुझाव दिया मार डाल ने से इसकी अकड सीधी नहीं होगी इसे तो तकदीर की ठोकरे खाने तक जिन्दा रखो।

राजा ने कहा- कल सूरज की पहली किरण से पहले इसे किले की खिड़की से बाहर फैंक देंगे । और कहा- इसे तन ढ़कने का कपड़ा भी न दिया जाए ।

सुबह हुई।

चकवा चकवी को कहता है

देख ले बाप को खरी कहने वाली लड़की को बाहर फेंक रहे हैं।

किले के दरवाजे के बाहर बहुत भीख मंगे कोढ़ी बिमार बूढें पड़े थे जो राजा की झूठन ब बचा कुचा बासी खाना लूटने की इन्तजार कर रहे थे।

राजकुमारी ने देखा एक कोढ़ी

उसे इशारों से बुला रहा है वह उसके पास गई तो उसने अपनी चादर उतार कर उसके नंगे शरीर पर डाल देता है और कहता है तू मेरी गाड़ी खिंचने की नौकरी कर ले भीख में जो पैसा आयेगा वह आधा आधा बांट लेंगे।

राजकुमारी ने सोचा इसने बिना स्वार्थ के पहले मेरी लाज ढ़की फिर बराबर का काम दे रहा है तो और भिखारी से अच्छा है उसने हाॅ कर दी।

वह उसके साथ गई।

उसकी मैली कुचेली पट्टीयां खोली तो उसे अचम्भा हुआ कि उसे कोढ़ नहीं है । उसकी हाथ पांव की अंगूलीयां काटी गई है।

पूछने पर बताया कि एक डाकू ने उस के पिता जी को लूटने के लिये घर में घुसा, इसने सामना किया तो उन्होंने इसे पकड़ कर इस की अंगूलीयां काट दी और घरके बाकी लोगों को मार डाला और घर लूट लिया ।

उसने बताया उसके पट्टियों को बंधे देख लोग उसे कोढ़ी समझ उसे भीख देने लगे, और वह लेने लगा। और उपाय क्या था।

राजकुमारी ने कहा आज से हम लोग गाड़ी छोड़ देते हैं आप घर ही बैठो मैं कोई नौकरी तलाश करती हूँ ।

शाम हुऐ घर आई तो बहुत खुश थी, एक तेली की घानी पर बैठ कर बैलों को हाँकने का काम मिला ।

फिर वह कहने लगी पिता जी के घर कमरों में बंद रहती थी।

एक दो दिन बाहर निकल कर दुनिया देख कर आती हूँ ।

वह सड़क पर आई तो उसने देखा एक केले का छिलका सड़क पर पडा है वह दौड़ कर उसे उठा ने लिये झुकी इतने में एक मोटा आदमी उस केले के छिलके पर पाँव रख कर फिसल जाता है, उसने उसे सम्भाल लिया और गिरने से बचा लिया । उस आदमी की जेब में सोने के सिक्के भरे थे उसने अपना हाथ जेब में डाला, और मुट्ठी भर के सिक्के निकाले और इसकी तरफ बढ़ा दिये। और बोला वह सामने मेरी हवेली है कोई काम हो तो आ जाना ।

00000

सब अच्छे हैं

कहानी

एक राजा के एक ही लड़का था वह जब बड़ा हो गया तो राजा ने कहा राज का काम सम्भालो।

राजकुमार ने कहा मैं अपना कुछ सिखना चाहता हूँ ।

राजा बोला यह तो उत्तम विचार है, जाऔ और कुछ सीखो। राजकुमार निकल गया

एक साल बाद,

वह वापस आया तो राजा ने पूछा क्या सीखा?

उत्तर था- चोरी करना ।

राजा ने कहा- अच्छा किया। पर इस विद्या की परीक्षा देनी होगी, और मैं नहीं मेरे एक मित्र हैं वे राजा है वे लेंगे । अगर उनकी परीक्षा में तुम उत्तीर्ण हो गये तो वापस आना, नहीं तो तुम्हें देश निकाला देता हूँ चोरियां करना और पेट भरना ।

राजकुमार उस राजा के पास गया और पिता जी का संदेश सुनाया।

राजा ने कहा- आप को मेरी कमर में बंधी तलवार चुरानी है। अगर मेरे को पता चल गया या मैंने तुम्हें पकड लिया तो इसी तलवार से तुम्हारे दो टुकड़े कर दूँगा और तुम सफल होते हो तो मेरी राजकुमारी से शादी कर दूँगा।

राजकुमार ने सोचा रात को तो तलवार खोलता होगा तो रात को तलवार चोरी करते हैं ।

वह पहरेदारों से बच कर महल में घूस गया और कर्मचारीयों से भी बचता बचाता उसके निजी कक्ष में जा छिपा । रात हुई राजा आया और अपने पलंग के उपर एक छींका छत से लटकाया उस में एक थाली रखी जिसमें लबालब किनारे तक दूध भरवाया उस पर अपनी तलवार रख दी। राजा ने सोचा-

पहली बात तो पलंग पर चढेंगा तो जाग रहा हूँ पकड़ा जायेगा

दूसरी बात जैसे ही तलवार को हाथ लगायेगा दूध छलकेगा और मेरी नींद खुल जायेगी । सब तसल्ली करके राजा रानी पलंग पर सो गये।

राजकुमार सब देख रहा था ।

जैसे ही आधी रात बिती और हल्की ठंड की बेला हुई और राजा को सर्दी लगी तो वह चादर सिर तक खैंच कर सो गया ।

राजकुमार ने सुगन मनाया और गुरू का ध्यान कर कमर में बंधा मरा साॅप निकाला पलंग के सिरहाने दूर खड़ा हो सारा दूध पी गया और तलवार उतार कर ले गया।

लौटते समय पहरेदारों ने टोका तो राजा की तलवार दिखा कर कहा- उनका हुक्म बजाने जा रहा हूँ मेरा समय पूछ ताछ में खराब मत करो कह कर चम्पत हो जाता है ।

अगले दिन

राजा को उसकी तलवार देने दरबार में जाता है तो राजा कहने लगा- बताय़ह चोरी तूने कैसे की।

वह कहता है- मेरे गुरु ने सिखाया है

चोरी दिमाग से की जाती है।

समय का इन्तजार करो।

बिल्ली की चाल चलना सिखों कुत्तों की सी नींद सोओ। लौमडी सी चतुराई से जबाब देना सीखो।

और सुगन मना कर काम शुरू करो।

क्यों कि चोर की गरदन भले ही कट जाऐ तो वह चलेगा पर पाँव में कांटा नहीं चूमना चाहिये।

राजा उसकी चतुराई से बहुत खुश हुआ और बोला- तू मेरी लड़की से शादी कर ।

तो वह बोला यह बात आप मेरे पिता जी से कहो।

वापस अपने पिता के पास गया तो उसने सीने से लगा लिया ।

कहने लगा- चोरी करना ही सीखा है या चोरी पकड़ना भी।

तो वह कहने लगा -

चोर चोर मौसेरे भाई।

उसने पिता से कहा- राज की सबसे बड़ी चोरी की फाइल मेरे पास भेज दो।

राजा ने कहा- भेज दूँगा पर सब बात अभी समझा देता हूँ ।

हमारा खंजाची हर तीन सोने के सिक्कों में एक नकली सिक्का मिला देता है ।

राज को नुकसान पहुंचा रहा है। तुम पकडो।

मेरे लिये किसी को सजा देना छोटी बात है लेकिन मैं चाहता हूँ कि चोर अपनी चोरी खुद कबूले और सबूत दे।

मैं इस काम में असफल रहा।

हमारा खजांची इस सफाई से नकली सोने के सिक्के बनाता है कि सर्राफ भी देख लेने पर मान लेते है कि असली है पर वे घर जा कर पारखी पत्थर पर रगड़ते हैं तो उनको पता चलता है कि चार में से एक सिक्का नकली है। वे शिकायत लेकर मेरे पास आते हैं तो खजांची का जबाब होता है इसे लेने से पहले देखना चाहिए। मैं खुद वही सिक्का हाथ में लेकर देखता हूँ तो मेरे य भी असली नज़र आता है और में उस आदमी को झूठा आरोप लगाने के अपराध में सजा दे बैठता हूँ। लेकिन मैं जानता हूं खजांची ही चोर है पर मेरे पास कोई ठोस सबूत नहीं है ।

अगले दिऩ

राजकुमार ने खजांची को भरे दरबार में बुलाया।

और पूछा- राज के कर्मचारियों को वेतन कौन से खजाने से दिया जाता है ।

जबाब था- वेतन थोड़ा ही होता है तो चाँदी के सिक्के ही से काम चल जाता है और वह रकम राजा जी अपने खजाने से निकाल कर अलग से दे देते हैं।

राजकुमार बोला- कर्मचारीयों में कभी असंतोष फैला क्या ॠ जैसा व्यापारी लोगों में है

खजांची बोला- कभी नहीं।

राजकुमार खजांची से बोला - आप अच्छी व्यवस्था कर लेते हैं आप को ईनाम देना चाहिए

अभी भी देर नहीं हुई है मैं राजा जी को सिफारिश करता हूँ आपको एक सौ अशर्फीयों से भरी थैली दे दी जाये और यह थैली उस खजाने में से दी जाये जहाँ और थैलीयाँ पड़ी रहती हैं जिससे राज का व्यापार चलता है।

खजांची के होश हवाश उड़ गये उसके मुंह से निकला-

मेरे को तो हजूर पचत्तर ही मिलेगी। पच्चीस तो नकली हैं।

ख़ज़ांची को बंदी बना लिया जाता है।

०००००

कुल्हाड़ी का घाव

फिर भी भर जाता है

बातों का घाव भरता नहीं।

+पंच तंत्र कहानी+

जिस में मनुष्य और जानवर एक दूसरे की भाषा समझते है

एक जंगल में एक शेर था।

उसका ड़र मनुष्यों में ही नहीं जानवरों तक में व्याप्त था।

एक दिन शेर ने झाड़ी में छिपे किसी जानवर को देखा तो उसे पकड़ने के लिये उसमें घुस गया। वहां उसके पंजे मे कांटा चुभ गया। उसने अपनी पूरी कोशिश की़ पर कांटा नहीं निकला।

उसका चलना दौड़ना बंद हो गया। भूख से भी मरने लगा ।

उस जंगल से एक ब्राह्मण जा रहा था़ शेर को देख कर वह भागा। पर ठोकर खाकर गिर पड़ा़ और बेहोश हो गया ।

जब होश आया तो पास ही शेर को खड़ा पाया। वह आँखें बंद कर के जान की खैर माँगने लगा।

कुछ देर बाद आँखें खोली तो लगा शेर उसके पास आकर बैठ गया और उसे खा नहीं रहा है । उस की हिम्मत न हुई कि वह उठके भाग जाये। वह वैसे ही पड़ा रहा और शेर भी उस के पास बैठा रहा।

अब वह सोचने लगा यह कोई अनहोनी बात है। वह साहस बटोर कर बैठा हुआ तो देखा शेर के आँसूं निकल रहे है और वह अपना पाँव उसकी गोद में रख रहा है। वह अनजाने में उसके आँसूं पौछ कर उसे पूचकारता है।

उसे विश्वास हो गया की शेर मुझें खायेगा नहीं । उसे तब आश्चर्य हुआ जब वह अपना पाँव उसके हाथ में रख रहा था। उसका डर तो निकल ही गया था क्योंकि अगर शेर चाहता तो एक ही वार में उसे फ़ाड देता। मगर ऐसा न हुआ।

जैसे ही उसने उसके पंजे को छूआ तो शेर दर्द भरी मिमयानी आवाज करने लगा। उसने गौंर से देखा तो एक लम्बा कांटा चुभा हुआ था। उसने आंव देखा न तांव् दम लगा कर कांटे को खैंच डाला ।

शेर के दर्द तो हुआ होगा पर वह उस पर झपटा नहीं ।

इसके बाद्

दोनों में दोस्ती हो गई। शेर कभी अपनी पीठ पर बैठा कर उसे घूमाता भी था और पालतू कुत्ते की तरह खेलता।

एक दिन ब्राह्मण ने शेर को कहा् हमारी दोस्ती गहरी है पर तू माँस खाकर आता है तो तेरे मुँह से बदबू आती है जो मेरे से सहन नहीं होती ।

इस पर चुप रहा।

पर कुछ देर बाद शेर बोला- बदबू न आये इसका बहुत सरल रास्ता है यह कुल्हाड़ी ले और मेरी कमर में जोर से मार ।

ब्राह्मण ने कहा- कोई और उपाय बता़ यह मेरे से नहीं होगा कारण अगर घाव नहीं भरा तो तू मर जायेगा जिसका मुझें जिंदगी भर अफसोस होगा ।

शेर बोला- घाव भर जावेगा़ तू ड़र मत।

ब्राह्मण ने जोर से कुल्हाड़ी का वार उसकी पीठ पर किया जो उसकी हड़्डियों तक गहरा हो गया ।

ब्राह्मण रोज उसके घाव पर मरहम पट्टी करता। घाव कुछ दिनों में ठीक हो गया ।

एक दिन शेर बोला- मित्ऱ

आज मैं तुझें खाऊंगा।

ब्राह्मण ने कहा- क्यों मजाक करता है़ खाना होता तो पहले दिन ही खा लेता । आज क्योंॠ

अब तो तेरा घाव भी भर गया है़ मैं तेरी पीठ पर बैठूंगा और दोनों सैर सपाटे पर चलेगें।

शेर ने कहा- घाव गहरा था वह भी भर गया पर तूने मेरे मुँह से आ रही बदबू की बात कही़

वह मेरे को जिंदगी भर के लिये चूभ गई़ और मेरे दिमाग में गहरा घाव कर गई।

उसे मैं भूल नहीं सकता ।

सारांश है बात सोच समझ कर निकालो। कही हुई बात और तर्कश से निकला तीर

00000

किस्सा चिंदी चोर का-

लड़की वाले समझें ये सज्जन लड़के वाले की तरफ़ के हैं
और लड़के वाले समझें ये लड़की वाला है।

ख़ूब जमके सफ़ेद सफ़ारी काला चश्मा पोलिस किये जूते।

बरात लड़की के घर के बाहर आ गई बड़ी जोर के नागिन डान्स चल रहे थे।

यह सज्जन मैदान में उतर आया बैंड के सामने धमाके दार डान्स किया।

बरात का ज़ोर शोर से स्वागत हुआ। ये सज्जन दुल्हे की घोड़ी के आगे आगे चल रहे थे।

डिनर चालू हुआ।
उसकी प्लेट में केवल 15 गुलाब जामुन आधी प्लेट मूंग का हलवा ।
सज्जन खा पीकर खिसक लिये।

फेरे चल रहे थे सब फुर्सत में थे

लड़की के फूफा जी ने दूल्हे के बाप से कहा- मान गये आपके दोस्त को हमें तो ऐसे ही बेतकल्लुफ़ आदमी पसन्द है जो खाने पीने में शर्म न करें क्या जमके हमारी मिठाईयों को पसन्द किया है।

वो बोले- मेरा कैसा दोस्त

फूफा बोले- अरे वही सफारीवाले चश्मेवाले।

लड़के का बाप बोला- ओह वो मैं समझा लड़की वालों की तरफ का होगा ।

इतने में लड़की का जीजा आया बोला- हमारी मिठाइयां तो आपके साले साहब को पसंद आई। आप लोगों ने तो कुछ खाया ही नहीं ।

सबके चेहरे पर हवाइयाँ उड़ने लगी।

ज़रा आप भी सावधान रहे।

०००००

रामायण पर धार्मिक फिल्म शूट करनी थी़ सूर्पनखा के रोल के वास्ते कोई अभिनेत्री मिली ही नहीं।

डाइरेक्टर अपने घर में झाड़ू पौछा करने वाली बाई को मना कर लाया जिस के नाक कान काटने का मेक अप करना था।

वह तो बिदक कर भागने लगी। डाइरेक्टर आवाज देता रहा- बाई ओ बाईसुन ठहऱ बता क्या हुआ

वह बोली- तेरा आदमी उस्तरा लेकर मुझ पर ऐसे चला़ उसका क्या भरोसा़ उसका हाथ जरा सा इधर का उधर हो जाये तो।

पास ही खड़ा था सोसायटी का वाचमेन जिसे विभिषन के रोल के लिये पकड़ कर लाया गया था़ वह भी भागने लगा़ तो डाईरेक्टर ने उससे पूछा तेरे को क्या हुआ

वह बोला- साब़ आपने जिसे रावण बनाया है वह सोसोयटी का सेक्रेट्री है और उसके मेरे पुरानी दुश्मनी है़ लंका छोड़ कर जाने पर लात मारने का सीन है इसने मेरे को दस लातें मारी है। फिर भी मारने से मन नहीं भरा है उसका।

ये नाराज होना मनाना चल ही रहा था कि दो लड़के गाल सहलाते आये जिन का हनुमान जी को आकाश से उतरने पर स्वागत करने का रोल था़ कहने लगे जो हनुमान बना है उसने हमें बहुत मारा और माँ बहन की गालियाॅ दी है।

डाइरेक्टर ने पूछा- ऐसे कैसे देगा ॠ

वे बोले- हनुमान जी को रस्सी के साहरे उपर से नीचे उतरना था़ रस्सी ढीली बंधी़ वे बीच में ही गिर गये़

हम समझे उतर गये़

हमने हमारा डाईलोग बोला- हे राम के दूत

पर वे तो माँ बहन की गाली देने लगे और कडक कर कहा- निकाल दूँगा भूत तेरी माँ का ...।।

पहले यह बताओ यह रस्सी किसने बाँधी

अब आप ही बताओं साब जी़ हम ने रस्सी बाँधी ही नहीं़ ऐसे कैसे मार खा लेंगें

डाइरेक्टर तो सकड़ी गली से ऐ जाऐ वौ जाये। सिर पर पाँव रख कर भagaa

०००००

राजा जोगी अगन जल

इनकी उल्टी रीत

कहानी

एक राजा के महल पर कुछ पहरेदार लगा रखे थे। इनमें से कुछ रात की ड्यूटी पर थे।

एक सुबह एक पहरेदार ने राजा को आकर बताया कि वह सावधान रहें क्यों कि उसे

सपना आया था कि आप पर

कुछ लोग हमला करेंगे। राजा ने सपने की सब बात सुनी वह उन दरवाजे पर पहरा और अधिक कर देता है जहाँ से हमलावर आने वाले थे।

दिन में राजा पर हमला करने वाले लोग आये पर सतर्कता अधिक थी वे पकड़े गये और राजा सुरक्षित रहा।

महल के सब कर्मचारीयों ने मिल कर उस पहरेदार को ईनाम दिये जाने की प्रार्थना की।

राजा ने उस पहरेदार को बुलाया और उसे तीन महिने की सजा सुनाई ।

सब ने राजा की दबी जुबान से

बुराई की जान बचाने वाले को ईनाम देना चाहिए था उस के बदले सजा दे रहे हैं ।

राजा का यह फैसला सारे शहर में चर्चा का विषय बन गया।

उसके मंत्री भी राजा से स्पष्टीकरण चाहने लगे।

राजा ने कहा- मेरा न्याय सही है। पहरेदार की ड्यूटी रात की थी उसे जागना चाहिए था। वह तो रात भर सोता रहा

और लम्बा सपना देखता रहा।

मैंनें जो सजा दी है वह सही है।

00000

खुदा के घर देर है

अंधेर नहीं।

कहानी

दिल्ली की रंगरेज़ गली में एक फकीर आवाज लगा रहा था-

मौला के घर देर है अंधेर नहीं.

एक लड़की घर के बाहर औटले पर पतीले में कपड़े रंग रही थी

फकीर से बोली- भूख तेरे को लगी तो तू माँग

उपर वाले को क्यों बीच में लाता है।

और जो तू कहता है उस बहरे को क्या पड़ी जो सुने।

फकीर बोला इस हाथ दे उस हाथ ले।

लड़की ने फ़क़ीर से कह- तो ठहर बाबा की झूठन की सालून रोटी मुझे खानी पड़ती है

बची है लाकर दू

फकीर बोला- दे उसका भी भला जो न दे उसका भी भला

फकीर ने वही बैठ कर खा लिया़ जब चलने लगा लगा तो बोला- तू क्या खायेगी अब ॠ

वह बोली- मुझे भूख नहीं लगती ।

फकीर ने पूछा क्योंॠ

वह बोली- बाबा की मार से पेट भर जाता है।

बीजी को भी बहुत लातें जमाते हैं कहते हैं लड़का क्यों नहीं जना। कहते हैं लड़की तो बोझ है।

फकीर उठ कर चला गया़ पर बोला- ललाटी में क्या लिखा है उसी को पढ़ना आता है ।

० ०

अमीर खुसरो की पगड़ीयाँ यही रंगरेज रंगा करता था। कभी कभी उसकी पगड़ी के पल्लू में बंधी असर्फी होती थी़ पर वह उस असर्फी को लेजा कर खुसरो को दे देता। पगड़ी की रंगत तो उसे पसन्द थी ही पर उसकी नियत भी अच्छी लगती थी।

खुसरो की पगड़ी उसकी लड़की ही रंगती थी।

अक्सर उसके वालिद कहते थे अमीर खुसरो की चर्चा शहर भर में सुनने को मिलती है- खुसरौ पारसी और हिन्दी का इलमी इन्सान है़ 25 वार की अक़्ल है उसमे़

पर उसे मेरे अलावा कोई रंगरेज़ पसंद ही नहीं आता।

मैंने कई बार दबी ज़बान में कहा- हज़ार घर बसालो

पर हर बार कहता है कि दिल के तार जो झनझनायेगी उस का हक होगा।

लड़की बात तो सुनती थी पर यह कह कर पगड़ी हाथ से झटक कर ले लेती- होगा हमें क्या ऋ

एक दिन लड़की ने देखा खुसरो की पगड़ी के पल्लू में एक कागज की परची बंधी है जिस में लिखा था

'कनक छुरी सी कामनी काहें को कटी हीन'

उसने पढ़ा और सोचा

इलमी को जबाब नहीं सूझा होगा इसलिये सोच विचार कर कहने के लिये यह पर्ची लिखी है

वरना सवाल पल्लू में नहीं बाँधते

उसे फकीर याद आया कह नहीं रहा था- सच्चे दिल से जो माँगो उपर वाला देगा।

उसे रात भर पगड़ी में बंधी पर्ची की वजह से नींद नहीं आई

फजल की अजान हो रही थी।

उसने जल्दी से पास पड़ी पगड़ी को सिर पर लपेटा और दुआ मांगी - मेरे मालिक खुसरो को जबाब सुझा।

उसने आँखें बंद करली तो उसे ज़हन में एक सूरत नज़र आई जैसे एक परी है

उसकी पतली कमर है और भरी भरी उभरी छाती

उसने जो देखा सो लिख कर पर्ची पगड़ी के पल्लू में बाँध दी।

खुसरो ने पर्ची पढ़ी और अगले दिन बादशाह को दरबार में जबाब दिया-

' कटी का मास काट कर

छाती में धर दीन'

उसी शाम रंगरेज की लड़की का हाथ माँगने खुसरो रंगरेज़ के घर गये।

० ० ० ० ०

यहीं लेने देने का हिसाब नीपट जाता है अगले जन्म तक कौन याद रखें ।

कहानी मत कहो सच्ची घटना समझों।

एक गाँव के दो गरीब दोस्त बड़े शहर में जाकर खूब धन कमाते हैं। और धन बराबर बाँट लेते हैं ।

एक के मन में आया हिस्से का धन उसके मन नहीं भाया।

वह बोला तो कुछ नहीं पर दूसरे दोस्त को जान से मार देता है। उसका भी धन रख लेता है।

शहर छोड़ वापस गाँव आ जाता है ।

दोस्त के घर वालो को कुछ रकम दे देता है यह कह कर कि यह उसके हिस्से में इतना ही आया था

उसके घर वाले उतने में ही राजी हो जाते हैं। उसे धन्यवाद देते हैं और सारा गाँव उसे इमानदार समझने लगा। शक की कोई वजह भी नहीं थी।

वह गाँव में अपनी शादी कर लेता है और एक लड़का हो जाता है जो जन्म से ही बीमार रहने लगा।

वह बेटे का ईलाज खूब कराता है पर एक के बाद दूसरी और दूसरी के बाद तीसरी बिमारी बेटे को लगी ही रहती है।

बेटा बीस साल का हो गया पर स्वस्थ एक दिन भी ठीक न रहा। आखिर डाक्टरों ने जबाब दे दिया कि एक दो दिन का मेहमान है दवाई भी बंद कर दो।

वह बेटे के पास बैठा था कि उसे लगा कोई उसे उसी नाम से पुकार रहा है जिस नाम से उसका दोस्त पुकारा करता था। वह गौंर करता है तो देखता है कमरे में कोई नहीं है।

इतने में उसका लड़का हॅस रहा है और कह रहा है कि तूने जितनी रकम मेरे हिस्से की दबाई ।

मैंनें दवा के खाते में वह तेरे से खर्च करा लिए । अपना हिसाब बराबर हुआ ।

और मर गया ।

०००००

लाख छिपाओ

अतीत पीछा नहीं छोड़ता

:कहानी:

एक राजा के दरबार में एक साधु आता है और कहता है मुझें एक सत्यवादी राजा की तैलाश है जो अपना अतीत न भूला हो और प्रजा से असली चेहरा छिपाता हो मैं उसका शिष्य बनना चाहता हूँ ।

राजा साधू की बात पर बड़े असमंजस में पड़ गया न कुछ माँगा न कुछ फ़रियाद ।

राजा ने विनम्रता से कहा- आप आये हैं तो कुछ दिन मेरे मेहमान बन कर रहें

मैं और मेरी रानी आपकी सेवा करेंगे।

साधू मान गया।

उसे राजा के निजी कक्ष के पास वाला कक्ष दे दिया गया।

कुछ दिनों में साधू को पता चला कि राजा प्रति दिन दो घंटे दरबार छोड़ कर किसी कक्ष में जाता है। वहाँ वह क्या करता है किसी को मालूम नहीं पर बाहर उसके जोर जोर से हॅसने की आवाजें आती हैं ।

रानी के बारे में पता किया कि वह खाने की बड़ी शौक़ीन हैं और उसके लिये बहुत अच्छा खाना बनता है पर फिर भी वह आधी भूखी रहती है और कर्मचारियों की निगाह चुराके दो रोटी अपने कपड़ों में छिपा कर उठ जाती है और भाग कर अलग ही कक्ष में घुस कर दरवाजा बंद कर लेती है। बाहर उसकी जोर जोर से हॅसने की आवाजें आती हैं ।

साधू को राजा रानी के रहस्य को जानने की प्रबल इच्छा हो गई।

उसने सतर्कता से उन दोनों के उन कक्षों में एक एक छेद किया जिनमें वे घुस कर हॅसते थे।

वह ताक में रहा, एक दिन, उसने राजा को दरबार छोड़ते देखा, वह जल्दी से उस कक्ष के बाहर गया और छेद से देखा-

राजा ने अपने सब किमती कपड़े जेवर माला कण्ठे ताज़ तो उतार दिये और एक अलमारी से फटे पुराने गन्दे चिथड़े निकाल कर पहने, और एक कोने में पड़े पत्थर पर बैठ गया और आसमान की तरफ हाथ उठा कर कुछ खुदा से माँग रहा है और जोर जोर से हॅस रहा है ।

अगले दिन रानी पर नज़र रखी, जैसे ही वह खाना छोड़ कर उठी, वह सतर्कता से कक्ष के बाहर जाता है

और छेद से देखता है कि उसने एक टूटा फूटा पुराना सा वर्तन उठाया और उसमें से बासी रोटीयाँ निकाल कर बिना साग सब्जी, खाने लगी। जैसे जैसे उस का पेट भरता रहा वह जोर जोर से हॅसती रही।

साधू अपने कक्ष में आ गया ।

उसे अपना अतीत याद आया।

आज के चालीस साल पहले-

एक आदमी सड़कों पर भीख माँगता था। यह राजा वही आदमी है।

और हमारे दरवाजे पर एक कंजरी आवाज लगाती थी " माई रूखा सूखा बासी बचा कुचा खाने को दो रोटी दे दे।

उसे ग्रंथो में लिखी यह श्रुति याद आई।

पुरूष्शय भाग्यम़ स्त्री चरित्रमं।

०००००

कहानी:

पूत सपूत क्यों धन संचय

पूत कपूत क्यों धन संचय।

एक धनी बाप का इकलौता बिगड़ेल बेटा था।

दोस्त उसके सौ थे

उनके लिये स्विमिंग पूल जिम कैसिनो डी जे सिनेमा घर खेल कूद के हॉल सामान रेस्ट्रां गस्ट हाउस कारों के कारवाँ

यानि जवानी है दिवानी का शगुल शराबा सब उस ग्रुप में मौजूद था और खर्चा सब लड़के का।

बाप को बेटे से जलन नहीं थी

पर उसकी पीठ पीछे उसके दोस्त कहते-

१ खूब धर के मूंडा

२ क्या बेवकूफ बनाया

३ मुर्गी फॅसी

आदि आदि अनेकों फब्तियां

बाप ने सोचा उसे सुधारने का एक ही तरीक़ा है आज़माता हूँ

एक रोज बेटे से बोला- चल एक दिन के लिये मुझे भी दोस्त मान ले
और एक शर्त भी लगाते हैं।

लड़का बोला- ओं डेडी वाट ऐ डरटि जोक़ जनरेशन गैप़ रोटन माईन्ड़
स्क्वायर नेल इन राउंड हौल।

बाप ने कहा- बात 15 घंटे की ही तो है। हार गया तो सब तेरा़ जीत गया तो बेटा मेरा।

बेटा बोला- डन

बाप बोला- डऩ कल सुबह मैं तुझें एक पैकेट दूंगा और एक डाईलोग़
जो तू बोलेगा। बस।

सवेरा हुआ़ बाप ने सफेद मलमल के कपडे में लपेटा एक गोल पैकेट दिया जिस पर
खून चमक रहा था। बाप बोला- तुझें तेरे हर दोस्त के पास जाना है और कहना है मैंने एक आदमी का सिर काट डाला है पुलिस को पता चले इसके पहले मुझें छिपा लो। बस।

वह सबसे पहले उसके पास गया जो हमेशा कहता था- यस बौस़ तेरे लिये जान हाजिर।

डाईलोग बोला गया ।

दोस्त बोला ' ऐंतू और कातिल भाग यहाँ से। और दरवाजा बंद।

दूसरा तीसरा चौथा और सौ दोस्तों के घर गया सब ने फटकार कर बेईज्ज़ती की।
किसी ने नहीं छिपाया।

हर दोस्त का दरवाज़ा खटखटाता गिड़गिड़ाता ठुकराके भगा दिया जाता।
रात के दो बज गये भूखा प्यासा थका निराश गिल्टी।

उसे याद आया एक गरीब दोस्त जो इससे पांच साल में कभी मिला ही नहीं
एक पैसा भी खर्च करवाया ही नहीं ।
उसके घर गया गली में ही खड़े हो कर आवाज लगाई
वह आवाज़ पहचान गया खिडकी खोली देखा नीचें आया। डाईलोग सूना।

बोला- पहले अंदर आ।

दरवाजा बंद कर के बोला यह गाँठ कोने में छिपा दे।

तेरा चेहरा बता रहा है दिन भर कुछ खाया पिया नहीं है। हाथ पाँव धो कर कुछ खाले फिर थोड़ा सो जा सुबह देखेंगे क्या करना है ।

अगली सुबह उसका बाप उस दोस्त के घर पहुँचा तो लड़के को अचम्भा हुआ ।

बाप से कहा – आपको कैसे पता चला कि मैं यहाँ हूँ ।

बाप बोला- मैं जानता था तेरा असली दोस्त कौन है मेरा बेटा यही मिलेगा ।

बाप बोला- खोल वह गाँठ उस में बकरे का कटा सिर है।

रोते हुऐ लड़के के आँसू दोस्त ने पूछे।

० ० ० ० ०

कहानी

जब किस्मत से एक से़ दो मिल जाते है तो उनका भगवान ही मालिक है।

इन्टरव्यू बोर्ड के सामने-

अफसर ने पूछा लामꣻ

जबाब था- लमेछ कुत्ता।

अनुवादक पास खड़ा था।

बोला नाम पूछ रहे हैं

उसके पीछे वाला बोला

रमेश गुप्ता बता रहे हैं ।

(दोनों तोतले)

दूसरा उम्मीद वार आया

दूसरे अफसर के सामने-

दोनों हकले

प्रश्न- न न न न नाम ककक क्या है ॠ

उम्मीद वार- क क क म म म ल।

- - -

एक लुहार ने मजदूर रखा दोनों हकले

भट्टी से गरम लोहा निकाले और मालिक बोले- मा मा मा मार

मजदूर- क क क कक हाँ

जब तक लोहा ठंडा हो जाये ।

- - -

सब्जी मंडी के बाहर दो दोस्त मिले

दोनो बहरे।

इशारों से अंदाज बाजी-

पहला- (हाथ से) बच्चे ठीक हैं ॠ

दूसरा- (समझा क्या खरीदे)

बैंगन खरीदे है

पहला- (उंगलीयों से पूछता है)

क्या करते हैंॠ

दूसरा- (समझा क्या करोगे)

जबाब दिया पका कर खाते हैं

० ० ० ० ०

कहानियॉ अपार हैं पढ़नेवालें बने रहें

मॉ शारदा की कृपा बनी रहे

शीघ्र ही अगला अंक आपके हाथों में होगा